वर्ष 24 । अंक 7 । फरवरी , 2023

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

क्या आप जानते हो ?

बसन्त के फूल

ट्यूलिप

यह बसंत ऋतु का मशहूर फूल है जो कई रंगों में खिलता है एवं देखने में काफी आकर्षक लगता है। इसे खिलने के लिए पर्याप्त धूप एवं पानी की आवश्यकता होती है। अधिक गर्मी होने पर इसके फूल मरने लगते हैं।

सूरजमुखी

पीली पंखुड़ियों के बीच में काले गोले वाला सूरजमुखी का फूल आकार में काफी बड़ा होता है। सूरजमुखी के बारे में यह बात प्रसिद्ध है कि यह फूल उस दिशा में घूम जाता है जिस दिशा में सूरज होता है। सूरजमुखी द्वारा खुद को सूर्य की दिशा में घुमा लेने की इस आश्चर्यजनक क्रिया को 'हीलियोट्रोपिज्म' कहा जाता है।

सरसों

सरसों के फूल बसंत के मौसम में पूरी तरह खिल जाते हैं। इस समय खेतों में सरसों की फसल लहलहाती है और पीले फूलों की चादर से खेत ढक जाते है. सरसों से तेल तो मिलता ही है इसके हरे पत्तों से साग बनाकर खाया जाता है। इसके तने का इस्तेमाल जानवरों के हरे चारे के रूप में किया जाता है।

गेंदा

गेंदा का फूल पीले और नारंगी दो रंगों में मिलता है। कोई पूजा – पाठ हो, शादी या त्योहार गेंदे के फूल का प्रयोग लगभग हर जगह होता है। सजावटी फूलों में तो इसकी मांग सबसे ज़्यादा रहती है। वैसे तो इसकी कई किस्में होती हैं लेकिन भारत में मुख्य रूप से अफ्रीकन गेंदा और फ्रेंच गेंदा की खेती की जाती है।

केसर का फूल

इसे क्रोकस कहते हैं। यह फूल बसंत के समय खिलता है एवं इसका रंग हल्का बैंगनी होता है। केसर इसी फूल का एक भाग है। यह अधिकतर पहाड़ी इलाकों में उगाया जाता है. इसके फूल तेजी से बढ़ते है एवं अपनी संख्या को बढ़ाते हैं।

कहाँ क्या?

आलेख

डॉ. शान्ति स्वरूप भटनागर	: किशोर श्रीवास्तव	– 11
राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	: डॉ. निधि माहेश्वरी	– 26
पासपोर्ट	: डॉ. आर.के. गर्ग	– 28
मेरा देश : गाँव विशेष	: शिखर चन्द जैन	– 34
खेल से बड़ा खिलाड़ी : पेले	: अनिल जायसवाल	– 38
मीठी रसभरी जलेबी	: मुगधा पांडे	– 47

कहानी

कहाँ गई मम्मी	: रजनीकान्त शुक्ल	– 07
अति से मारी जाती है मति	: नयन कुमार राठी	– 09
कैसे मिली सफलता	: अर्चना त्यागी	– 15
अब तो जागो रे	: डॉ. प्रीति प्रवीण खरे	– 19
खुली ज्ञान की आँख	: पूरन सरमा	– 22
चतुर लोमड़ी का झूठ	: राधेश्याम भारती	– 23
मिक्स एंड मैच	: इंजी. आशा शर्मा	– 31
शेर सिंह की सूझ–बूझ	: साधना श्रीवास्तव	– 35
नन्ही परी और जादूगर	: सोनाली यादव	– 39
पतंग का धागा	: आशीष श्रीवास्तव	– 48

कविता-गीत

बिल्ली और खरगोश	: डॉ. रोहिताश्व अस्थाना	– 06
ऐसा संकल्प हमारा है	: राजेन्द्र निशेश	– 10
ऋतु बसन्त	: संतोष कुमार सिंह	– 10
रोज करो व्यायाम	: महेन्द्र जैन	– 10
मनोज कुमार पांडेय	: डॉ. वेद मित्र शुक्ल	– 13
हम पंछी हैं	: गोविन्द भारद्वाज	– 18
मेरा घोड़ा	: दिविक रमेश	– 18
सुन्दर धरती	: डॉ. मृदुल शर्मा	– 18
क्या है नाम हमारा ?	: डॉ. कैलाश गुप्ता 'सुमन'	– 30
आई तेज हवा	: योगेन्द्र प्रताप मौर्य	– 40

विविधा

विस्मयकारी भारत	: रवि लायटू	– 14	बूझो तो जानें	: मीरा सिंह 'मीरा'	– 25
दिमागी कसरत	: प्रकाश तातेड़	– 16	दो कुंडलियाँ	: श्याम सुन्दर श्रीवास्तव	– 33
वर्ग पहेली	: राधा पालीवाल	– 17	खेल का समय	: चाँद मोहम्मद घोसी	– 37

रत्नमंजूषा

सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो – 29, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये– 30, सुडोकू–32, व्हाट्सएप कहानी– 33, आओ पढ़ें : नई किताबें – 36, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला– 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार– 44, बाल कलम, जन्मदिन की बधाई – 46, किड्स कॉर्नर– 49

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 24 अंक : 7 फरवरी, 2023

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452

सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651

प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन

कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री

ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा

चित्रांकन | सुशील कुमार, दीपिका

अध्यक्ष | अविनाश नाहर

महामन्त्री | भीखम सुराणा

कोषाध्यक्ष | राकेश बरड़िया

प्रकाशन मन्त्री | देवेन्द्र डागलिया

संयोजक, पत्रिका प्रसार | सुरेन्द्र नाहटा

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

एक प्रति	: 30 रु.
वार्षिक	: 300 रु.
त्रैवार्षिक	: 800 रु.
पंचवार्षिक	: 1200 रु.
दस वर्ष	: 2400 रु.
पंद्रह वर्ष	: 7000 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित

ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन	UPI	RAZOR PAY https://rzp.io/l/uGTBPsrRx
ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY IDBI Bank BRANCH Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC : IBKL0000104		

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

www.anuvibha.org www.bachchonkadesh.com www.facebook.com/bkdpage

सम्पादक की पाती

प्यारे बच्चो,

आज विवेक अपने स्कूल के बच्चों के साथ बाल भवन देखने गया था। वहाँ उनके लिए कई तरह की एक्टिविटीज रखी गई थी। सभी बच्चों को खूब मजा आया। वहीं एक मोटिवेशनल स्पीकर भी आए जिन्होंने बच्चों से बहुत सी बातें की, प्रश्न पूछे और बच्चों के प्रश्नों के जवाब भी दिये।

बच्चों से उनका एक प्रश्न था कि कोई दूसरा उन पर नियन्त्रण करे या अनुशासन करे तो उन्हें कैसा लगता है ? किसी बच्चे ने नहीं कहा कि उसे अच्छा लगता है।

उन्होंने पूछा कि दूसरों के नियन्त्रण से बचने के लिए क्या उनके पास कोई उपाय है ? सभी बच्चे सोचने लगे। उन्होंने विवेक की तरफ इशारा करके उससे इसका समाधान जानना चाहा। विवेक खड़ा हुआ और सोचते हुए बोला – ''सर, यह तो तभी सम्भव है जब हम किसी को मौका ही न दें कि उसे हमें नियन्त्रित करने की जरूरत पड़े। विवेक का जवाब सुनकर सर बड़े खुश हुए। उन्होंने फिर पूछा – जरा सोच कर बताओ कि इसके लिए तुम्हें क्या करना होगा ? विवेक बोला – सर, मुझे नियमों का पालन करना होगा और गलत कामों से बचना होगा।'' सर ने फिर विवेक को शाबासी दी और सभी बच्चों से पूछा कि ''क्या वे विवेक की बात से सहमत हैं ?'' सभी ने अपनी सहमति जताई।

सर ने सबको समझाते हुए कहा – ''बच्चो, यदि स्वयं पर हमारा नियन्त्रण है तो दूसरों के नियन्त्रण से हम अवश्य अपने आपको बचा सकते हैं। लेकिन यह आसान नहीं है। इसके लिए हमें नियमित अभ्यास करना होगा – संयम का अभ्यास। संयम अर्थात खुद का खुद पर नियन्त्रण – सेल्फ कंट्रोल। जैसे बोलने का संयम – कुछ गलत न बोलें, अपशब्द न बोलें, जरूरत से ज्यादा न बोलें, झूठ न बोलें, तेज आवाज में न बोलें। इन बातों पर ध्यान देकर यदि हम रोज इनका अभ्यास करेंगे तो हमारा बोलने पर संयम हो जाएगा। इसी तरह खाने का संयम, व्यवहार का संयम, पहनने का संयम जैसी रोजमर्रा की अपनी गतिविधियों पर हम अपना नियन्त्रण स्थापित कर सकते हैं।''

विवेक को संयम की बात बड़े काम की लगी। पहली बार उसने संयम का सही मतलब समझा। उसने घर आते ही अपनी मम्मी को सारी बातें बताई और उनके साथ बैठकर उन सब बातों की सूची बनाई जिन पर उसे अपना खुद का नियन्त्रण बनाना है। माँ को अणुव्रत गीत की वह पंक्ति याद आ गई – ''अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा।'' माँ और बेटे ने यह तय कर लिया था कि अब वे दूसरों को यह मौका ही नहीं देंगे कि वे उन पर नियन्त्रण जमाएँ। वे खुद अपने पर अपना अनुशासन स्थापित करेंगे।

बच्चो, आप भी जरूर चाहेंगे खुद पर खुद का अनुशासन। इसके लिए आपको स्वयं निश्चय करना होगा और आज से ही, अभी से ही प्रयास शुरू कर देना होगा।

बच्चों का देश परिवार की शुभकामनाएँ आपके साथ है,

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

सामंजस्य

एक कुम्हार की दो पुत्रियाँ थी। एक किसान के घर और दूसरी कुम्हार के घर ब्याही गयी थी। एक दिन पिता अपनी पहली पुत्री के घर गया, जो किसान की पत्नी थी। बातचीत में लड़की ने कहा– ''और तो सब ठीक है पर वर्षा के बिना खेती चौपट हो रही है। इसलिए भगवान् से प्रार्थना करो कि वर्षा करें।'' दूसरी बेटी के घर गया, जो कुम्हार की पत्नी थी। उससे भी हालचाल पूछा। उसने कहा– ''पिताजी, कच्चे घड़ों को पकाने के लिए अलाव जलाया है इसलिए भगवान् से प्रार्थना करो कि वर्षा न हो।''

पिता के लिए समस्या हो गयी कि वह किस बेटी के लिए प्रार्थना करे। एक पुत्री वर्षा चाहती है और दूसरी नहीं चाहती। उसने दोनों को समझाते हुए कहा– ''यदि वर्षा हो गयी तो खेती में अनाज खूब होगा, जिसका आधा हिस्सा बड़ी बहन, छोटी बहन को दे देगी और यदि वर्षा नहीं हुई तो घड़े अच्छे पकेंगे, जिसकी आमदनी का आधा हिस्सा छोटी बहन, बड़ी बहन को दे देगी।'' इस समाधान से दोनों पुत्रियाँ प्रसन्न हो गयी।

कथाबोध– समाज के विरोधी हितों का भी सामंजस्य द्वारा समाधान किया जा सकता है। इसके लिए निष्पक्ष व विवेकपूर्ण चिन्तन आवश्यक होता है।

पद्य कथा

बिल्ली और खरगोश

भइया ने है बिल्ली पाली
दीदी ने खरगोश।

भइया जी की बिल्ली कबरी
करती कई कमाल।
चूहे तो क्या बड़े–बड़े भी
कुत्ते हो बेहाल।

उसे देखकर बन्दर मामा
के उड़ जाते होश।।...

दीदी का खरगोश निराला
खाता हरियल घास।
दौड़ भाग में सदा बनाता
ओलम्पिक इतिहास।

जाने कितना भरा हुआ है
उसमें अद्भुत जोश।।...

बिल्ली और खरगोश सदा
रखते ऐसा मेल।
बड़े प्रेम से रोज खेलते
दौड़ भाग के खेल।

अचरज में हम सब रह जाते
दंग और खामोश।।...

डॉ.रोहिताश्व अस्थाना
हरदोई (उत्तर प्रदेश)

कहाँ गई मम्मी?

असम के गोलाघाट जिले में धनसिरी नदी के किनारे पर बसे सोनारीगाँव में अनन्त सोनोवाल और दिगंत सोनोवाल रहते थे। उनके बच्चों को पढ़ने के लिए जिस स्कूल में जाना पड़ता था उसके लिए धनसिरी नदी पार करनी पड़ती थी। नदी पार करने के लिए नाव के द्वारा वे आ जा सकते थे। यह 26 अक्टूबर 2009 की घटना है। जब दिगंत सोनोवाल की पत्नी तोरामई ने अपने बच्चों रेखामनी और अर्चना से कहा कि– "देखो आज मुझे बाजार जाना है। वापसी में तुम लोग मेरे साथ ही घर आ जाना।" "ठीक है मम्मी।" – दोनों लड़कियों ने सहमति में सिर हिला दिया।

"आप किस समय पर आओगी।" उन्होंने अपनी मम्मी से पूछ लिया। "तुम्हारी स्कूल की छुट्टी किस समय होती है। बस उसी हिसाब से मैं अपना वापसी का कार्यक्रम बना लूँगी। अगर कुछ जल्दी पहुँच गई तो मैं इन्तजार कर लूँगी और अगर तुम्हारी छुट्टी होने तक मैं किसी कारण से न पहुँच पाऊँ तो स्कूल के गेट पर तुम मेरा इन्तजार कर लेना।" – तभी अर्चना के चाचा जी की लड़की कल्पना आ गयी थी और वह उसी स्कूल में पढ़ती थी।

अब वे तीनों आपस में बातें करती हुई अपने स्कूल की ओर चल दी। दिन में उधर वे स्कूल में पढ़ रहीं थी। इधर तोरामई घर गृहस्थी का काम निबटा कर धनसिरी नदी पार करके बाजार जा पहुँची। खरीददारी करके वे स्कूल की छुट्टी होने से पहले ही उसके गेट पर खड़े होकर बच्चों की प्रतीक्षा करने लगी। घंटी बजने के साथ ही गेट के बाहर बच्चों का रेला निकल पड़ा। कुछ देर बाद ये तीनों लड़कियाँ बाहर की ओर आती दिखाई दी। उन्होंने पहचान कर उन्हें इशारा किया तो वे तीनों लपक कर उनके पास आ गई। अब वे तीनों अपने स्कूल की बातें आपस में एक दूसरे को बताते हुए नदी की ओर चल दी।

जल्दी ही वे चारों लोग नदी के किनारे पहुँच गए। उन्होंने देखा कि उस समय नदी पर कोई नाव नहीं थी। सिर्फ एक ही नाव थी जो दूसरे किनारे पर थी और वह भी छोटी सी और हाथ के पतवार से चलने वाली थी। जब वह इधर आई तो वे चारों और पाँचवें पाउकोन सोनोवाल भी उस नाव पर चढ़ गए।

चलने की शुरूआत करते ही उन्हें पता लग गया कि नाव में जरूरत से ज्यादा सवारी हो चुकी हैं। पर अब वापस लौटने की जगह उन्होंने ईश्वर की प्रार्थना करते हुए नाव को आगे बढ़ाना जारी रखा। नदी में पानी का बहाव तेज था वह नाव को अपने बहाव के साथ ले जाना चाहता था। उसके साथ तालमेल बनाने का प्रयास करते–करते नाव सन्तुलन खो बैठी और नदी में उलट गई।

उस जगह पर नदी की गहराई दस फीट से ज्यादा थी। नदी का बहाव भी तीव्र था। नदी में गिरते ही वे सब बचने के प्रयास में हाथ पाँव मारने लगे। नदी के दोनों किनारों पर उस समय मदद के लिए कोई भी उपस्थित नहीं था। रेखामनी और कल्पना अचानक हुए इस घटनाक्रम से सन्न रह

देखें पृष्ठ 13...

जीवन विज्ञान के प्रयोग

क्षमता और शक्ति का विकास

अपनी क्षमता के अनुसार सही दिशा में कार्य करने में अपनी शक्ति लगाना अच्छा है। इसके विपरीत जब आप अपनी शक्ति को मार–पीट, छीना–झपटी या गलत कार्यों में प्रयोग करते हैं तो इसे क्षमता का सही उपयोग नहीं कहा जा सकता। शक्ति को अच्छे कार्यों में लगाकर हम अपनी क्षमता का विकास कर सकते हैं।

हमारी रीढ़ के निचले छोर पर 'शक्ति–केंद्र' है, जहाँ हमारी सारी शक्ति एकत्रित रहती है। इस शक्ति को यदि हम अपने 'ज्ञान–केंद्र' (चोटी के स्थान) पर ले जाकर शरीर के सभी अंगों तक समरूप में बहने दें तो हमारी शक्ति का सही उपयोग होगा। हमारी क्षमता भी सही दिशा में विकसित होगी। दूसरी ओर यदि हमारी शक्ति, शक्ति–केंद्र पर ही बनी रहेगी तो हम मार–पीट, झगड़ा–फसाद आदि करके उसे नष्ट कर देंगे। हिंसक कार्यों में शक्ति को नष्ट करना उचित नहीं कहा जा सकता।

अपनी क्षमता का विकास करने के लिए हमें अपनी शक्ति को शक्ति–केंद्र से ज्ञान–केंद्र पर ले जाने का और शरीर के सभी अंगों तक समान भाव से वितरित करने का अभ्यास करना होगा।

शक्ति का समान वितरण करने की विधि : अंतर्यात्रा

- सुखासन अथवा वज्रासन में बैठकर आँखों को कोमलता से बन्द करें। रीढ़ की हड्डी को सीधा रखें।
- दो मिनट तक महाप्राण ध्वनि का अभ्यास करें।
- शरीर को बिलकुल स्थिर रखें, हिलें–डुलें नहीं। शरीर में कहीं भी तनाव न रखें और हलकेपन का अनुभव करें।
- चित्त को रीढ़ के नीचे शक्ति–केंद्र से ऊपर मस्तक की ओर उठाएँ और धीरे–धीरे ज्ञान–केंद्र अर्थात चोटी के स्थान पर लाएँ। इस तरह चित्त को ज्ञान–केंद्र से शक्ति–केंद्र और शक्ति–केंद्र से ज्ञान–केंद्र की यात्रा कराएँ।

- अब इस यात्रा को श्वास के साथ जोड़ें। गहरी और लम्बी श्वास लें। श्वास भरते समय ज्ञान–केंद्र से शक्ति–केंद्र पर आएँ और छोड़ते समय शक्ति–केंद्र से ज्ञान–केंद्र की ओर ले जाएँ। ऐसा 3 मिनट करें।
- धीरे–धीरे आँखें खोलें और शक्ति की इस यात्रा को समाप्त करें इस प्रायोगिक अभ्यास से आपकी शक्ति का ज्ञान हेतु सदुपयोग होगा और बेकार की हिंसा में आपकी शक्ति बरबाद नहीं होगी। इस प्रक्रिया को 'अंतर्यात्रा' कहते हैं।

आचार्य श्री महाश्रमण के वचन

❖ **उच्च मनोबल वाला व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी अपना धैर्य नहीं खोता।**

❖ **दूसरे के दुःख का अपना मानकर चलने वाला व्यक्ति महानता के पथ पर गति कर सकता है।**

❖ **वाणी का संयम और सम्यक प्रयोग करने वाला व्यक्ति आत्मानुशासन की दिशा में अग्रसर हो सकता है।**

अति से मारी जाती है मति

रूबी रोते हुए दादाजी के कमरे में आई। उन्होंने उसे सहलाया। रोने का कारण पूछने पर सुबकते हुए वह बोली– ''अब मैं मम्मी की कोई बात नहीं मानूँगी। उनके कहे अनुसार हर काम करती हूँ। पढ़ाई भी करती हूँ। फिर भी उनको मुझ पर भरोसा ही नहीं है। बार–बार मेरे पास आकर टोकती है। आज भी बार–बार आ रही है।'' कुछ रूककर फिर बोली– ''दादाजी, मैं आपके पास आ गई अगर मम्मी यहाँ आए तो डाँट देना।''

दादाजी मन ही मन सोचने लगे– ''अति से मारी जाती है मति। रुबी के साथ भी यही हुआ है। बहू यानी इसकी मम्मी द्वारा की जा रही अति से इसकी मति मारी गई है। पर इसे और बहू को कैसे समझाए? अगर इसके पक्ष में बोलूँ तो बहू नाराज, अगर बहू का पक्ष लूँ तो यह नाराज! कैसे इन्हें समझाया जाए। उन्हें चुप देख रूबी बोली– ''दादाजी! आपने मेरी बात का जवाब नहीं दिया। लगता है आप भी मम्मी की तरफ है। मैं जाती हूँ। यह समझूँगी इस घर में मेरी सुनने वाला कोई नहीं है।''

दादाजी हँसे और बोले– ''बेटी! सब्र रखो और यहाँ बैठो।'' थोड़े समय बाद मम्मी आई उसे दादाजी के साथ बैठे देख जोर से चिल्लाई– ''हा...हाँ... महारानी, यहाँ दादाजी के पास बैठो और मजे करो। पढ़ाई के नाम से तुम्हारी जान जाती है। आज पापा को आने दो सारी शिकायत करूँगी।'' दादाजी बोले– ''बहू! यह मेरे पास तो अभी आई है और देखो, किताबें भी लाई है।'' ''बस बस बाबूजी! आप और कुछ न कहे।'' ''अच्छा तुम्हारी और इसकी क्या लड़ाई है? मैं नहीं जानता। ऐसा करो मेरे लिए ठंडा जल ले आओ।'' वह चली गई। थोड़े समय बाद जल ले आई। जल पीकर वे बोले– ''बहू! चाय पीने का मन कर रहा है।'' वह चली गई। चाय बना लाई। चाय पीकर वे कुछ बोलने ही वाले थे कि वे बोली– ''बाबूजी! अब और कुछ नहीं कहना। ऊपर–नीचे आते–जाते मैं बहुत थक गई हूँ। अब और कोई काम मुझसे नहीं होगा।''

दादाजी बोले– ''बहू! बुरा न मानो तो एक बात कहूँ। सुनो! अति से मारी जाती है मति।'' वह बोली– ''मैं कुछ समझी नहीं।'' वे बोले– ''देखो बहू! मैंने तो तुम्हें पानी और चाय लाने को कहा। दो बार तुम नीचे गई–आई। इसके पहले शायद तुम रूबी के पास आ–जा रही होगी और देख रही होगी कि यह पढ़ाई कर रही है या नहीं। जिस तरह तुम नीचे–ऊपर आते–जाते थक गई ओर मुझे कह दिया कि अब कोई काम नहीं कहना। यही हाल इस बच्ची का भी है। तुम बार–बार आकर जब तब इसे पढ़ाई के लिए टोकती रहती हो। क्या तुम्हें अपनी बेटी पर विश्वास नहीं है। क्या तुम जानती हो, अति से मारी जाती है मति यानी ज्यादा अति या दबाव से मति यानी बुद्धि मारी जाती है और हम जो करना चाहते वह करने में मन जरा भी नहीं लगता है। दिखावे के लिए हम करते जरूर है पर परिणाम अच्छे नहीं होते हैं।''

''बस बाबूजी! अब और कुछ न कहिए, सब समझ में आ गया। मैं आपकी बात को गहराई से समझ गई हूँ। मेरा स्वभाव ही ऐसा है, जो अपनी प्यारी बेटी पर अविश्वास करके इसके साथ अति करती रही। जिससे इसकी मति और इसके साथ मेरी भी मति मारी जाती रही। अब मैं अपनी प्यारी बेटी पर पढ़ाई के लिए दबाव नहीं बनाऊँगी।'' बहू के ऐसा कहने पर दादाजी हँसे। रूबी भी हँसते हुए बोली– ''वाह दादाजी! आपने मेरी समस्या दो मिनट में हल कर दी।''

नयन कुमार राठी
इन्दौर (मध्य प्रदेश)

ऐसा संकल्प हमारा है

अंधकार से हमको लड़ना
नई डगर पर हमको चलना,
आशा का संसार रचेंगे
ऐसा संकल्प हमारा है।

मिलजुल कर शुभ काम करेंगे
विपदाओं से नहीं डरेंगे,
पौधारोपण खूब करेंगे
ऐसा संकल्प हमारा है।

सौहार्द हमें बढ़ाना है
सुख–दुःख में साथ निभाना है,
तूफानों से अथक लड़ेंगे
ऐसा संकल्प हमारा है।

निर्झर–सा हमको है बहना
अनुशासित है हमको रहना,
गुरु–जनों का मान करेंगे
ऐसा संकल्प हमारा है।

राजेन्द्र निशेश
चंडीगढ़

रोज करो व्यायाम

सुबह सवेरे उठकर बच्चो
रोज करो व्यायाम।
चुस्त रहोगे फिर दिन भर तुम
खूब करोगे काम।।

तन से जो भी स्वस्थ रहेंगे
मन से भी वे स्वस्थ।
चेहरे पर रौनक रहती है
हरदम रहते मस्त।।

स्वच्छ नागरिक अगर देश का
स्वस्थ रहेगा देश।
उन्नत होगा देश हमारा
बदलेगा परिवेश।।

बच्चे स्वस्थ ही सुन्दर लगते
जग में पाते नाम।
क्यों ना फिर तुम करो आज से
शुरू सभी व्यायाम।।

महेन्द्र जैन
हिसार (हरियाणा)

ऋतु वसंत

ऋतु वसंत में आते फूल,
डाल–डाल खिल जाते फूल।

गमले, क्यारी, उपवन में भी,
खिलते और लुभाते फूल।
झीलों और पहाड़ों पे खिल,
शूलों में मुस्काते फूल।

रंगबिरंगे प्यारे–प्यारे,
मन को बहुत सुहाते फूल।
खुश हो करके हवा संग में,
झूम–झूम इठलाते फूल।

भँवरे इनको गीत सुनाते,
खूब सुगंध लुटाते फूल।
मधुमक्खियों को मधु देने,
अपने पास बुलाते फूल।

बनकर हार गले में झूलें,
मानव को हर्षाते फूल।
ईश्वर के चरणों में चढ़कर,
खुद को गर्वित पाते फूल।

संतोषकुमार सिंह
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

बालक बना महान

विलक्षण वैज्ञानिक एवं कवि
डॉ. शान्ति स्वरूप भटनागर

जो व्यक्ति मेहनत, लगन, अपने काम के प्रति निष्ठा और विलक्षण प्रतिभा के दम पर देश का नाम रोशन करते हैं । ऐसे व्यक्ति महापुरुष की श्रेणी में रखे जाते हैं और वे अमर हो जाते हैं। महान वैज्ञानिक डा. शान्ति स्वरूप भटनागर का नाम भी ऐसे ही लोगों में बहुत सम्मान से लिया जाता है।

प्रारंभिक काल

21 फरवरी 1894 को विलक्षण प्रतिभा के धनी एक बालक का जन्म पकिस्तान के पंजाब प्रान्त के शाहपुर जिले में हुआ था। बालक के पिता का नाम परमेश्वर सहाय भटनागर था। इनके पिता इनको मात्र 8 माह की आयु में ही इस दुनिया में छोड़कर परलोक सिधार गए। पिता की मृत्यु के बाद इनका बचपन अपने ननिहाल में ही बीता। इनका लालन पालन इनके नाना ने किया जो कि एक इंजीनियर थे।

बचपन की रुचियाँ

नाना की योग्यता और व्यवहार का इन पर गहरा असर पड़ा। इसी कारण ये बचपन में खेलने के स्थान पर पढ़ाई के बाद का अपना खाली समय खिलौनों में विज्ञान खोजने में बिताते थे। नाना की संगति में रहते हुए इस बालक की रुचि विज्ञान और अभियांत्रिकी में बढ़ती चली गयी थी। इस प्रकार इस किशोर का मन यांत्रिक खिलौने, इलेक्ट्रानिक बैटरियाँ और तारयुक्त टेलीफोन बनाने में रमने लगा था। धीरे–धीरे इनमें नाटक और कविता लेखन के प्रति भी रुचि जाग्रत हुई।

शिक्षा–दीक्षा

प्रारम्भिक शिक्षा के बाद डा. भटनागर ने 1911 में लाहौर के दयाल सिंह कालेज में दाखिला लिया। यहाँ उन्होंने 'करामाती' नाम का एक नाटक लिखा जो उर्दू भाषा में था। इस नाटक के अँग्रेजी संस्करण को 1912 में 'स्टेज सोसायटी' ने सर्वश्रेष्ठ नाटक का पुरस्कार प्रदान किया। आगे चलकर दयाल सिंह कालेज ट्रस्ट ने डॉ. भटनागर को उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जिसकी मदद से उन्हें इंग्लैंड के यूनिवर्सिटी कॉलेज लन्दन में पढ़ने का अवसर मिला और 1921 में डॉक्टर ऑफ़ साइंस (डीएससी) की उपाधि प्राप्त करने में इनको सफलता प्राप्त हुई। इससे पूर्व शांति स्वरूप भटनागर ने 1913 में पंजाब यूनिवर्सिटी से इंटरमीडिएट, 1916 में लाहौर से बी एससी और 1919 में रसायनशास्त्र में एम एससी की परीक्षा पास की थी।

महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय योगदान

देश को विज्ञान व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में डॉ. शांति स्वरूप का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। वह एक महान वैज्ञानिक और रसायनज्ञ के रूप में देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी खूब चर्चित हुए। उन्होंने देश के औद्योगिक शोध को आगे बढ़ाने में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनको भारत में अनुसन्धान और प्रयोगशालाओं का जनक माना जाता है। उन्होंने भारत में राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना में उल्लेखनीय कार्य किया। विज्ञान के क्षेत्र में देश को

स्वावलम्बन की राह पर आगे ले जाने में भी उनकी अहम् भूमिका रही ।

विभिन्न पदों पर कार्य और उपलब्धियाँ

डॉ शांति स्वरूप भटनागर के नेतृत्व में ही देश में सीएसआईआर (काउन्सिल ऑफ़ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च) की स्थापना की गई और वे भारत में यूजीसी (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) के पहले अध्यक्ष भी बने। आज़ादी के पश्चात् भारत में वह भारतीय रसायन सोसाइटी, राष्ट्रीय विज्ञान संस्थान और भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान काँग्रेस के अध्यक्ष भी रहे।

उन्हें ब्रिटिश वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसन्धान विभाग ने 250 पाउण्ड वार्षिक फैलोशिप भी प्रदान की । 1921 में वह इंग्लैंड से भारत वापस आ गए थे। उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर के रूप में कार्य किया। यहीं पर डॉ शान्ति स्वरूप भटनागर ने विश्वविद्यालय के कुलगीत की रचना कर एक वैज्ञानिक के साथ–साथ अच्छे कवि होने का सबूत भी पेश किया। बनारस में तीन वर्ष बिताने के बाद वे पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर चले गए। यहाँ उन्हें विश्वविद्यालय में फिजिकल केमिस्ट्री का प्रोफ़ेसर और रासायनिक प्रयोगशाला का निदेशक बनाया गया और यहाँ रहकर उन्होंने कई शोध कार्य और अनेक अनूठे व चमत्कारी आविष्कार किये।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि डॉ. शांति स्वरूप भटनागर ने होमी जहाँगीर भाभा और विक्रम साराभाई, जैसे अनेक महान वैज्ञानिकों के साथ मिलकर भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की आधारशिला रखी। उन्होंने कई युवा व होनहार वैज्ञानिकों का मार्गदर्शन भी किया । उन्होंने नेशनल रिसर्च डेवलपमेंट कारपोरेशन (एनआरडीसी) की स्थापना में भी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

पुरस्कार और सम्मान

विज्ञान के क्षेत्र में उनके कार्यों को देखते हुए देश–विदेश में उन्हें कई पुरस्कार और उपाधियाँ मिलीं। उनके द्वारा भारत में 12 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना की गई। विज्ञान और अभियांत्रिकी क्षेत्र में उनके योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने वर्ष 1954 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया ।

स्मृतिशेष हुए

भारत के इस महान वैज्ञानिक की मृत्यु दिल का दौरा पड़ने से 61 वर्ष की आयु में 1 जनवरी 1955 को हुई। देश को डॉ शांति स्वरूप भटनागर के देहांत से अपार क्षति हुई। उनके योगदान को देखते हुए और देश की प्रतिभाओं को आगे लाने के लिए सरकार द्वारा वर्ष 1958 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में डॉ. शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार की स्थापना की गयी। उनकी याद और सम्मान में भारत सरकार ने 1994 में भारतीय डाक टिकट भी जारी किया।

देश के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उनकी निधन के समय उनके बारे में कहा था कि उनमें चीजों को हासिल करने का जबरदस्त उत्साह और ऊर्जा थी। इसी का परिणाम रहा कि उन्होंने उपलब्धियों का अनूठा रिकार्ड बनाया, जो वास्तव में उल्लेखनीय है।

किशोर श्रीवास्तव
नई दिल्ली

हमारा व्यवहार गणित के शून्य की तरह होना चाहिए जो स्वयं में तो कोई कीमत नहीं रखता लेकिन दूसरे सदा उम्मीद करें कि यह मेरे साथ जुड़े तो मेरी कीमत दस गुना कर दे।

परमवीर चक्र विजेता

मनोज कुमार पांडेय

सुनो! कारगिल के समर में
बहुत योद्धा लड़े महान,
हुए मनोज कुमार पांडेय
शक्तिशाली वीर जवान।

बचपन से परमवीर सैनिक
बनने को मन में ठाना,
उसकी गाथा चलो सुनाए
जग ने था लोहा माना।

एक अकेले ग्यारह दुश्मन–
सैनिक उनने मारे थे,
खालुबार की दुर्गम चौकी
पाकिस्तानी हारे थे।

भारत की सेना का उनने
बच्चो! मान बढ़ाया था,
पर्वत की ऊँची चोटी से
दुश्मन मार भगाया था।

डॉ. वेद मित्र शुक्ल
नई दिल्ली

'कहाँ गई मम्मी ?' पृष्ठ 7 का शेष....

गई और घबराहट में तेजी से तैरती हुई नदी के किनारे की तरफ आ गईं। उनके साथ ही पाउकोन सोनोवाल भी तैरते हुए किनारे तक आ लगे।

परन्तु इस हड़बड़ी में उन्हें यह भी याद नहीं रहा कि नन्ही आठ साल की अर्चना को तैरना नहीं आता है। वह बचने के लिए हाथ पाँव मार रही थी और पानी के बहाव में बहती जा रही थी। इस दौरान तोरामई उन्हें कहीं दिखाई नहीं दी इसलिए वे दोनों अर्चना को बचाने के लिए पानी में दोबारा कूद गई। पानी का बहाव बहुत तेज था। वे तेजी से तैरते हुए अर्चना के पास पहुँच गई। दोनों ही भरसक प्रयत्न करती हुई जैसे–तैसे तेज लहरों को काटती हुई अर्चना को किनारे तक ले आईं।

बारह साल की रेखा और कल्पना ने भरसक कोशिश कर मौत के मुँह से झपट्टा मारकर अर्चना की जान तो बचा ली मगर वे तोरामई को न बचा सकी। होश में आते ही अर्चना ने चारों तरफ नजर दौड़ाते हुए रेखा से पूछा– ''दीदी, मम्मी कहाँ हैं?'' रेखा और कल्पना की आँखों में आँसुओं के सिवा कुछ न था। रेखा और अर्चना बिना माँ के हो गई थी। इस घटना में जहाँ रेखा और कल्पना को अर्चना को बचा पाने की खुशी थी तो वहीं तोरामई को न बचा पाने का असहनीय दुःख था।

बहादुर रेखा और कल्पना को अपनी जान की परवाह न करते हुए अर्चना की जान बचाने के साहसिक कार्य के लिए वर्ष 2010 के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार के लिए चुना गया। उन्हें संयुक्त रूप से यह पुरस्कार देश के प्रधानमन्त्री जी ने दिल्ली में गणतन्त्र दिवस के अवसर पर प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

बताओ तो जानें

यहाँ आकाश में उड़ रहे 5 पक्षियों में बिल्कुल एक से 2 पक्षी कौन से नम्बर के हैं ?

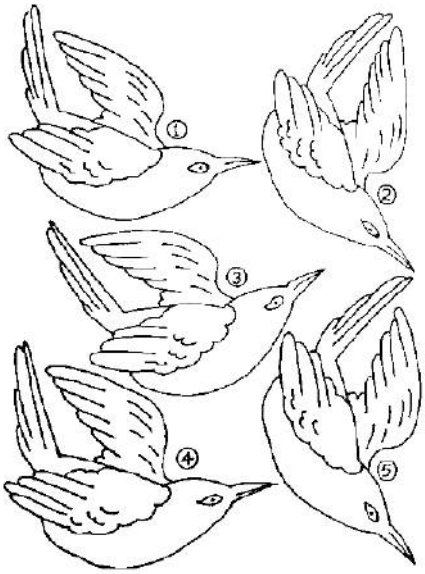

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

विस्मयकारी भारत

भारतीय रेलवे के मार्ग में आने वाले स्टेशनों के बीच ज़रा देखिए कि रिश्तों से लेकर जानवरों तक कितनी विविधता है इन नामों में ...

बाप (जोधपुर ज़िला, राज.), नाना (सिरोही पिंडवाड़ा, राज.), बीबीनगर (भुवनगिरी, तेलंगाना), साली (जयपुर, राज.), ओढ़निया चाचा (पोखरण, राज.), सहेली (होशंगाबाद, म.प्र.), काला बकरा (जालंधर, पंजाब), सुअर (रामपुर, उ.प्र.), कुत्ता (केरल-कर्नाटक सीमा), बिल्ली (सोनभद्र, उ.प्र.), भैंसा (आगरा,उ.प्र.), पथरी (प्रमाणी, महाराष्ट्र), दीवाना (पानीपत, हरियाणा) और चिंचपोकली (मुंबई, महाराष्ट्र) आदि... ..

मिहिर सेन, सन 1958 में इंग्लिश चैनल तैरकर पार करने वाले, पहले भारतीय ही नहीं बल्कि प्रथम एशियाई भी थे जिन्होंने सन 1966 में पनामा नहर की एक छोर से दूसरे छोर तक 77 किमी. की दूरी भी इसीतरह तैरकर पार की थी। ये उनका अटूट विश्वास ही था जिसने उन्हें पांच महाद्वीपों के सातों समुद्रों को तैरकर पार करने वाला विश्व का प्रथम व्यक्ति बना दिया।

गुजरात में सरदार सरोवर बांध के निकट, अमरीका की 'स्टैचू ऑफ़ लिबर्टी' से लगभग दोगुनी सरदार वल्लभभाई पटेल की 182 मी. ऊंची मूर्ति 'स्टैचू ऑफ़ यूनिटी' विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा है जो 180 किमी./घंटे की तेज़ हवा तथा 6.5 तीव्रता का भूकंप सह सकती है।

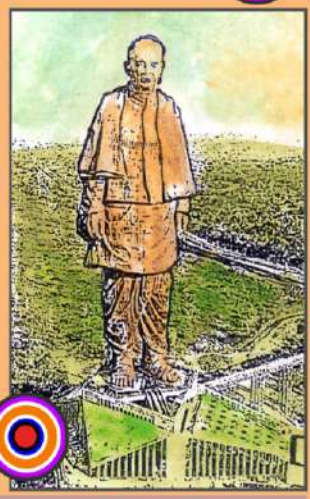

मूंछें कभी पौरुष और प्रतिष्ठा का प्रतीक मानी जाती थीं। आज वह दौर न भी रहा हो पर यह जानकर कि दुनिया में सबसे लम्बी मूंछें एक भारतीय के नाम हैं, गौरव का अनुभव तो होता ही है और हमें यह गौरव दिलाया है जयपुर (राज.) के रामसिंह चौहान ने, जो 14 फ़ीट लम्बी मूंछों की बदौलत गिनेस बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड्स में अपना नाम दर्ज करा चुके हैं।

रवि लायटू
बरेली(उत्तर प्रदेश)

कैसे मिली सफलता

"अब रिटायरमेंट की उम्र हो गई है। याददाश्त काम नहीं करती है सर की।" नए कर्मचारियों ने चुटकी ली। कान्ता प्रसाद जी धीरे से मुस्कुरा कर बात को टालकर अपने काम में व्यस्त हो गए। वार्षिकोत्सव के आयोजन की पूरी ज़िम्मेदारी उनके कंधों पर ही थी। उनके विद्यालय का वार्षिकोत्सव पूरे शहर में चर्चित था। अभिभावकों के अलावा भी बहुत से लोग हर साल वार्षिकोत्सव देखने आया करते थे। कान्ता प्रसाद जी को पूरा शहर जानता था। उनका नाम हर व्यक्ति सम्मान से लेता था। यही कारण था कि दूसरे शिक्षक गण जब भी मौका मिलता उनको नीचा दिखाने का अवसर नहीं छोड़ते थे। फिर भी वह शांतिपूर्वक अपने काम में लगे रहते और सभी से प्रेमभाव रखते थे।

विद्यालय की परम्परा के अनुसार वार्षिकोत्सव में इस वर्ष भी विद्यालय के एक पूर्व छात्र को ही मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया था। नाम था डॉ. रघुवीर प्रसाद। विद्यालय में दो चार लोगों को छोड़कर अन्य सभी कर्मचारी नए ही थे। रघुवीर के बारे में किसी को याद नहीं आ रहा था। पुराने कर्मचारियों में कान्ता प्रसाद जी भी थे। विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक। जबसे विद्यालय बना था तभी से वह नियुक्त हो गए थे। प्रथम कक्षा से लेकर बारहवीं तक सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों को उन्होंने पढ़ाया था। उनके छात्र अपने देश में ही नहीं विदेशों में भी ऊँचे पदों पर स्थित थे।

कान्ता प्रसाद जी अच्छे शिक्षक होने के साथ–साथ छात्रों के बीच खूब लोकप्रिय थे। सभी छात्रों से उनका आत्मीय सम्बन्ध था। गरीब हो या अमीर, बुद्धिमान हो या मंदबुद्धि सभी छात्रों से उनका स्नेह बराबर का था। जरूरतमंद छात्रों की वह यथासम्भव मदद करते थे। अपने पढ़ाए अधिकतर छात्रों के नाम उन्हें याद थे किन्तु रघुवीर का नाम उन्हें भी याद नहीं आ रहा था। सभी लोग मेधावी छात्रों की सूची में ढूँढ़ रहे थे लेकिन रघुवीर का नाम मस्तिष्क में तो क्या किसी सूची में भी अंकित नहीं था। अथक प्रयास करने पर भी उन्हें याद नहीं आ पाया।

वार्षिकोत्सव प्रारम्भ हो गया था। मुख्य अतिथि पधार चुके थे। वे शहर के पास ही स्थित कृषि अनुसंधान केन्द्र में वरिष्ठ वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत थे। आयोजन में व्यस्त होने के कारण कान्ता प्रसाद जी उनसे मिल नहीं पाए थे। कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तो मुख्य अतिथि मंच पर आए। माइक हाथ में लेकर उन्होंने बोलना शुरू किया– "मेरे मार्गदर्शक, विद्यालय के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक आदरणीय कान्ता प्रसाद जी को नमन करता हूँ। यदि उन्होंने मेरे विवेक को जाग्रत नहीं किया होता तो आज़ अपने विद्यालय में मुख्य अतिथि बनकर नहीं आ पाता।" मुख्य अतिथि के भाषण के दौरान ही भीड़ ने बाहर निकलना शुरू कर दिया था। इसलिए कान्ता प्रसाद जी प्रसाद वितरण में व्यस्त थे। अपना नाम भी वे सुन नहीं पाए थे। प्रसाद ग्रहण करने के उपरान्त सभी उनके चरण स्पर्श करते जा रहे थे।

तभी सूट–बूट पहने एक स्मार्ट दिखने वाले व्यक्ति ने उनके चरण स्पर्श किए और प्रसाद के लिए

अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। "पहचाना नहीं सर ?" उस व्यक्ति ने पूछा। कान्ताप्रसाद जी ने दिमाग पर जोर डाला। चश्मे को साफ करके उस व्यक्ति को ध्यान से देखा। "रघु, तुम ?" स्मार्ट व्यक्ति एक बार फिर उनके पैरों की ओर झुका लेकिन उन्होंने उसे गले से लगा लिया। "तो तुम ही हो आज के मुख्य अतिथि?" रघुवीर प्रसाद हँसे। "आपकी प्रेरणा से आज़ यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है, सर।" कान्ता प्रसाद जी के साथ खड़े दूसरे शिक्षकों ने प्रसाद वितरण जारी रखा।

कान्ता प्रसाद रघुवीर के साथ विद्यालय स्टाफ के पास आ गए। चाय नाश्ता शुरू हुआ। कान्ता प्रसाद जी ने रघु के रघुवीर बनने की कहानी सुनाई।" रघु गाँव से शहर पढ़ने के लिए आया था। पढ़ाई में ठीक था। छात्रावास में रहता था। लेकिन एक ही समस्या थी जब भी परीक्षा आती यह फसल काटने गाँव चला जाता। दसवीं में दो बार फेल हुआ। एक दिन मैंने ऐसे ही कक्षा में घोषणा कर दी कि जो इस बार परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करेगा उसे उसकी मर्जी का पारितोषिक विद्यालय की तरफ से दिया जाएगा।

रघु मेरे पास आकर बोला– "सर, अगर मैं प्रथम आया तो क्या मेरे बाबा के पास विद्यालय एक नौकर भेज देगा? वे अकेले ही सब काम करते हैं इसलिए फसल कटने के समय मुझे गाँव में जाना पड़ता है। वे कहते हैं करनी तो खेती ही है। विद्यालय में नाम लिखा होने से किसी अच्छे घर में मेरी शादी हो जायेगी।" सभी शिक्षक उत्सुक थे यह जानने के लिए कि एक असफल विद्यार्थी इतना सफल इनसान कैसे बन गया? कान्ता प्रसाद जी इतना कहकर चुप हो गए थे।

इस बार रघुवीर ने बताया– "सर ने प्रधानाचार्य जी की अनुमति से मेरे बाबा को बुलाकर समझाया कि पढ़ लिखकर भी खेती की जा सकती है। केवल विद्यालय में नाम लिखाने से ही अच्छे घर में शादी नहीं होगी बल्कि अच्छी पढ़ाई करने से एक अच्छा घर खुद ही बना सकेगा।" कान्ता प्रसाद जी ने रघुवीर की पीठ थपथपाते हुए कहा– "इसने बहुत मेहनत की और अव्वल रहा। मेरी बात का मान रख लिया। किसान का बेटा कृषि वैज्ञानिक बन गया।" सभी ने जोर–जोर से तालियाँ बजाकर उनकी बात का समर्थन किया। रघु की कहानी विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को सुनाई गई। एक शिक्षक चाहे तो अपने विद्यार्थियों को किसी भी सांचे में ढाल सकता है। उनके मनोबल को बढ़ाकर असम्भव कार्य भी कर सकता है।

अर्चना त्यागी
जोधपुर (राजस्थान)

इस शब्दजाल में 17 मिठाइयों के नाम छुपे हुए हैं। प्रत्येक खाने के समीप वाले अक्षारों को ऊपर–नीचे, नीचे–ऊपर, दाएँ–बाएँ, बाएँ–दाएँ व तिरछे लगातार क्रम में पढ़ते हुए नाम खोजिए। शब्द जाल के प्रत्येक अक्षर का उपयोग करना है। कुछ अक्षरों का उपयोग बार–बार भी कर सकते हैं–

मो	र	पे	ड़ा	ता	खी
द	स	इ	म	र	ती
क	गु	ला	ब	फी	णी
रा	ल्ला	ड़ी	जा	मु	आ
ज	ले	बी	धे	न	म
भो	अ	ल	व	र	पा
ग	ढी	रो	ब	द	क
बूं	पि	स्ता	र्फी	कं	ला

उत्तर इसी अंक में

प्रकाश तातेड़
उदयपुर (राजस्थान)

वर्ग पहेली

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. गरीबों पर दया करने वाला (5)
5. धनवान, व्यापारी (2)
6. पैदल भ्रमण करने वाले (4)
7. आगमन (2)
8. ब्रह्मा जी, प्रजापालक (4)
10. उधार का विपरीतार्थ (3)
12. ग्वालियर मध्यप्रदेश का एक प्राचीन शहर, छोटा दाँत (3)
13. रोजाना, प्रतिदिन (2)
14. चट्टान का टुकड़ा, बड़ा पत्थर (4)
16. क्रमबद्ध व व्यवस्थित ज्ञान (3)
19. खौफ, भय (2)
20. छल, धोखा, फरेब (3)
21. जिन्दगी, हयात (3)
22. रूई को अँग्रेजी में कहते हैं (3)

ऊपर से नीचे

1. दीपक जलाकर नदी में प्रवाहित करना, किसी को देना या मन्दिर में रखना (4)
2. नदी, सरिता (2)
3. आर्य समाज के संस्थापक (4)
4. यात्रा, भ्रमण करने वाला (2)
5. सेना का नायक, मुखिया (4)
7. स्वतन्त्र, चन्द्रशेखर स्वयं को कहते थे (3)
9. पत्नी, संगिनी, स्त्री (2)
11. लक्ष्मी, रमा, विष्णुप्रिया (3)
13. जो डरे नहीं (3)
14. जीजा बाई के पुत्र, वीर मराठा शासक (3)
15. टुकड़े–टुकड़े करना, विरोध करना (3)
16. कठिन, दुर्गम (3)
17. सूचित करने का काम, बोध कराना (3)
18. नृत्य या नाटक करने वाला (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि माघ मास आने पर टेसू का वृक्ष और पानी से बाहर पृथ्वी पर आ पड़ी मछली की दशा बदल जाती है। इसी प्रकार संसार में अपने स्थान से छूट जाने पर संसार की अन्य वस्तुओं की दशा भी बदल जाती है। मछली जल से बाहर आकर मर जाती है वैसे ही स्थान बदलने पर संसार की अन्य वस्तुओं की भी हालत होती है।

माह मास लहि टेसुआ मीन परे थल और,
त्यों रहीम जग जानिए, छुटे आपुने ठौर।

हम पंछी हैं

हम पंछी हैं नील गगन के
निकले हैं ऊँची उड़ान पर।
पंख पसारे मिलकर सारे
वार करते हैं तूफान पर।

राह खुली है खुली मंजिलें
थक के नहीं होते चूर हम।
खुली हवा में उड़ते मिल के
लेते आनन्द भरपूर हम।

पेड़ों पर बने घर हमारे
घास–फूस के बड़े सलौने।
डाल–डाल के पत्ते–पत्ते
बन जाते हैं सभी बिछौनें।

बँधे नहीं हम बंधनों में
आजादी के परवाने हैं।
दाना–पानी चुनने वाले
हम मनमौजी दीवाने हैं।

रहा है परों पर नाज हमें
नहीं पिंजरों में बन्द करो।
शपथ उठाओ, बच्चो सारे
हम से पक्का अनुबंध करो।

एक ही धर्म है हम सबका
राज हमारा इस जहान पर।
हम पंछी हैं नील गगन के
निकले हैं ऊँची उड़ान पर।

गोविन्द भारद्वाज
अजमेर (राजस्थान)

मेरा घोड़ा

ना पीता ना खाता कुछ भी
मेरा घोड़ा कितना अच्छा।
मजे मुझे यह पूरे देता
मेरा घोड़ा सबसे अच्छा।

खूब झुलाता, नहीं गिराता
हर दम पूँछ उठाए रखता।
थका–थका भी कभी न दिखता
जब देखो तब सरपट चलता।

हो अगर आकाश में जाना
मेरे सपने में आ जाता।
बिठा पीठ पर मुझको अपनी
जाने कहाँ–कहाँ ले जाता।

क्यों मारूँ मैं इसको कोड़ा
दर्द न इसको होता होगा!
मार–पिटाई अगर न हो तो
कितना सुन्दर जग यह होगा।

दिविक रमेश
नोएडा (उत्तर प्रदेश)

सुन्दर धरती

सबसे सुन्दर अपनी धरती
यह सबका है पालन करती।
पर्वत, नदियाँ, झरने, घाटी
इसकी उपजाऊ है माटी।

बर्फ़ बिछी रहती पर्वत पर
जल बन बहती, यही पिघल कर।
यह जल सरिताओं में जाता
फिर धरती की प्यास बुझाता।

सजते वृक्ष ओढ़ हरियाली
लगते खेत अन्न की थाली।
आभूषण धरती के जंगल
जहाँ करें पशु पक्षी मंगल।

वृक्ष हमें मीठे फल देते
कई मुश्किलों का हल देते।
प्राणवायु भी देते हमको
बहुत जरूरी जो जीवन को।

खेत खूब खाद्यान्न उगाते
जिनसे हम सब भूख मिटाते।
धरती को हम स्वच्छ बनाए
वृक्ष लगा कर इसे सजाएँ।

डॉ. मृदुल शर्मा
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

नाटिका

अब तो जागो रे

पात्र: चार दोस्त – रोहन, पीहू, निधि, और माधव, दुकानदार विदूषक,

आवश्यक सामग्री : पॉलिथीन के बैग, गुब्बारे, गुड़िया के बाल "खाने में मीठी" केला, जलेबी, पॉपकॉर्न

दृश्य : एक

(विवेकानंद स्कूल में बाल मेला आयोजित।

विदूषक का गाते हुए, मंच पर प्रवेश)

सुन लो बच्चो सुन लो, बात पते की गुन लो।
बाल मेला लगा है, पसन्द की वस्तु चुन लो।
लाल–लाल गुब्बारे, दिखते कितने प्यारे।
जलेबी जरूर खाना, दोस्त को भी खिलाना।
सामान जी भर खरीदो, पॉलिथीन मत लेना।
प्लास्टिक का त्याग करो, जीवन सफल बनाओ।।

(गीत सुनकर बच्चे पहुँचते हैं)

निधि : आप क्या बताना चाहते हो?

विदूषक : बताओ, ये बाल मेला क्यों आयोजित किया गया है?

पीहू : नाचने–गाने और पकवान खाने।

माधव : खेलने–कूदने और मौज मनाने।

निधि : मिलने–जुलने और बतियाने।

रोहन : पढ़ाई–लिखाई से छुट्टी पाने।

(इतने में विदूषक गुब्बारे ले आता है।)

विदूषक : रंग–बिरंगे गुब्बारे, लगते कितने प्यारे।

रोहन : मुझे दे दो सारे।(इतना कहते हुए केला निकाल पन्नी वहीं फेंक देता है।)

पीहू : ओ 'अक़्ल के कच्चे।' पन्नी फेंकने से पहले, दीवार पर लिखे वाक्य को तो पढ़।

निधि : चलो मैं पढ़ देती हूँ। लिखा है– पहला, प्लास्टिक और पॉलिथीन जीवन के लिए ख़तरा। दूसरा– कचरा डस्टबिन में ही डालें।

रोहन : कचरे का तो समझ में आया, लेकिन प्लास्टिक के बारे में ऐसा क्यों?

रोहन : पॉलिथीन की थैलियाँ, प्लास्टिक से बनी वस्तुएँ सभी उपयोग करते हैं।

निधि : ये तो हमारे दैनिक जीवन में बहुत काम आती हैं।

पीहू : फिर समस्या क्या है?

विदूषक : इससे बहुत समस्याएँ पैदा हुई हैं।

निधि : वो कैसे?

विदूषक : रोजाना के जीवन में जो पॉलिथीन हम उपयोग करते हैं, उसे मिट्टी में घुलने में दस से बीस साल लगता है। अन्य प्लास्टिक को वर्षों लग जाते हैं।

रोहन : तब तक इसका क्या होता है?

विदूषक : ये प्रदूषित कचरा बनकर धरती पर इकट्ठा होता रहेगा। ये स्वास्थ्य को नुक़सान पहुँचाते हैं।

पीहू : ओह!मुझे आज पता चला!

माधव : मेरे घर और पड़ोस के घर पॉलिथीन का उपयोग रोज होता है।

माधव : हमें तो अभी तक कुछ हुआ ही नहीं!

निधि : विदूषक अंकल, इससे स्वास्थ्य को नुक़सान कैसे पहुँचता हैं?

विदूषक : गरमी और धूप जब इस पर पड़ती है, तब ये हानिकारक हो जाता है। कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी का ख़तरा बढ़ जाता है। प्लास्टिक को रंगीन बनाने के लिए धातु के अंश मिलाए जाते हैं। उससे कैंसर या उसके जैसी बीमारी हो सकती है।

निधि : वो कौन–कौन से हैं?

विदूषक : रंगीन प्लास्टिक से बने कैरी बैग, डिब्बे। सामान की पैकिंग के बॉक्स और जिनमें खाने–पीने के सामान रखे जाते हैं।

रोहन : ये तो सबके घर में रखे जाते हैं!

विदूषक : इन्हीं में से जहरीले तत्व, खाने–पीने की वस्तुओं में प्रवेश कर जाते हैं।

रोहन : ये ऐसे पहुँचते हैं! हमें पता ही नहीं था!

पीहू : हम लोग बड़े मजे से, प्लास्टिक के डिब्बों में खाना रखकर खाते हैं।

विदूषक : इसके अलावा, प्लास्टिक में रखकर ओवन या माइक्रोवेव में खाना गरम करते हैं। तब ये नियमित रूप से शरीर में पहुँचते रहे तो मस्तिष्क के ऊतक को भी नष्ट कर सकते हैं।

रोहन : फिर क्या होगा?

विदूषक : इससे अलजाइमर जैसी भूलने की बीमारी का खतरा है।

माधव : तब तो, प्लास्टिक या पॉलिथीन के इस्तेमाल के बारे में तुरन्त सतर्क होना पड़ेगा।

विदूषक : आप लोग सतर्क होकर, प्लास्टिक से बचने के उपाय ढूँढ़ो, मैं अभी आया।

माधव : पहले हम मेला घूमने का काम तो कर लें।

रोहन : चलो चलें। (सारे बच्चे चल पड़ते हैं)

दृश्य : दो

(बच्चे मेले में घूम रहे हैं)

रोहन : पीहू वो देख गुड़िया के बाल।

पीहू : भैया, दो दे दो। कितने पैसे?

दुकानदार : पाँच रुपए।

पीहू : ये लो पैसे।

रोहन : वो देख जलेबी।

पीहू : मुझे बहुत पसन्द है।

रोहन : चल खाते हैं।

पीहू : रोहन, पॉलिथीन में मत ले। वापस कर दे।

रोहन : दे दूँ तो रखूँ किसमें?

पीहू : हाथ में पकड़ लेंगे।

दुकानदार : हाथ गन्दे हो जाएँगे।

पीहू : तो धो लेंगे। पॉलिथीन नहीं लेंगे। विदूषक अंकल ने पॉलिथीन से बीमार होने का खतरा बताया है।

दुकानदार : सब तो ले रहे हैं!

पीहू : हम भी पहले लेते थे,अब नहीं!

निधि : भैया, मुझे पॉपकॉर्न देना। (पॉलिथीन में रखकर देता है)

माधव : उसमें मत लेना! वापस करो।

दुकानदार : फिर क़िसमें दूँ?

माधव : पेपर में दे दो।

दुकानदार : जैसी आपकी मर्जी। (कागज में देता है। (विदूषक का आगमन)

विदूषक : यह सब सामान आपने किसमें लिया?

पीहू : हमने सब सामान कागज में लिया।

विदूषक : शाबास बच्चो! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी। (पीहू ने एक खिलौना खरीदा)

दुकानदार : ये लीजिए आपका सामान।

पीहू : पॉलिथीन में नहीं! कागज में लपेटकर दीजिए।

दुकानदार : कागज फट जायेगा।

माधव : कोई बात नहीं। आप तो कागज में ही दीजिए।

दुकानदार : बच्चो! कहीं उस विदूषक ने तुम लोगों को गुमराह तो नहीं किया?

निधि : नहीं तो।

दुकानदार : (स्वयं से बातें करते हुए) लगता है, विदूषक की 'चिकनी चुपड़ी' बातों में ये नासमझ बच्चे फँस गए? (पीहू दुकानदार की बात समझते हुए)

पीहू : हम फँसे नहीं! समझ गए। मैं दिल्ली गई थी, वहाँ प्लास्टिक के कूड़े का बहुत बड़ा पहाड़ देखा।

माधव : कूड़े का भी पहाड़ होता है?

पीहू : हाँ! नानी ने बताया ये प्लास्टिक के कूड़े का पहाड़ है। ये अन्य वस्तुओं के समान नष्ट नहीं होता।

माधव : इसीलिए ये इकट्ठा होकर पहाड़ बन जाता है?

पीहू : एकदम सही। आओ हम निश्चय करें। आज से पॉलिथीन को ना कहें।

माधव : इतनी जल्दी! सोचने का समय तो दे!

पीहू : सोचने का समय गया। अब संकल्प लेने का समय है।

माधव : एकदम से इतना बड़ा बदलाव? (यह सुन विदूषक पास आकर कहता है)

विदूषक : इस बदलाव के लिए दिक्कत तो होगी। तभी तो मैं तुमसे उपाय सोचने का कह रहा था।

माधव : अंकल, उपाय आप ही बता दो ना?

विदूषक : पहला, प्लास्टिक को ना कहो।

पीहू : जो हमने कर दिया।

विदूषक : दूसरा, गरम–गरम खाना प्लास्टिक के बर्तन में तुरन्त ना रखें। तीसरा, बाजार जाते समय कपड़े की थैली अवश्य लेकर जाएँ। प्लास्टिक और पॉलिथीन के बजाय प्राकृतिक चीजों से बनी वस्तुओं का उपयोग करें।

पीहू : अब से मैं पॉलिथीन के स्थान पर कपड़े की थैली, कागज के लिफाफे उपयोग में लाऊँगी।

विदूषक : हम केरल के कन्नूर जिले से सीख सकते हैं।

माधव : वो कैसे?

विदूषक : पूरे जिले में कोई भी दुकानदार पॉलिथीन की थैली या प्लास्टिक के डिस्पोजेबल बर्तन न तो बेचता है न ही उपयोग करता है।

माधव : इस कार्य के लिए पूरे जिले वालों की प्रशंसा की जानी चाहिए।

पीहू : और सम्मान भी।

विदूषक : इसी तरह के प्रयोग पॉलिथीन और प्लास्टिक कचरे की समस्या का समाधान कर सकते हैं।

पीहू : हम तो जाग गए। अब दूसरों को जगाएँगे।

(सभी बच्चे समर्थन करते हैं)

विदूषक : बच्चों ने पॉलिथीन को नो कह, आने वाले खतरे से निपटने की एक अच्छी शुरूआत की। (दर्शकों से) बच्चे तो जाग गए और आप कब जगेंगे?

(विदूषक का गीत गाते हुए मंच से प्रस्थान)

जागो भैया जागो रे, आज नहीं तो कब होगा।
चेताना है तुम सबको, जग को भी चेताना है।
इस जगत को बचाना है, रोग से मुक्ति पाना है,

(पर्दा गिरता है)

डॉ. प्रीति प्रवीण खरे
भोपाल (मध्य प्रदेश)

खुली ज्ञान की आँख

राजा की हार्दिक इच्छा थी कि शहर के बाहर जो महात्मा आए हुए हैं, वे एक बार उनके महलों में भी पधारें। पूरा शहर उनके दर्शनार्थ उमड़ा जा रहा था। राजा भी उनके दर्शनों को लालायित था। राजा ने अपने सेवकों को राजा के पास भेजा। महात्मा ने महलों में जाने से कतई मनाही कर दी। राजा ने सोचा–शायद सेवकों के जाने की वजह से न आए हों। अतः राजा ने मन्त्री को भेजा। मन्त्री ने राजा का सन्देश कहा– ''महाराज! आप महलों में पधारें, राजाजी आपके दर्शनों को आतुर हैं। आप महलों में चलकर उन्हें तृप्त करें।''

मन्त्री से महात्मा बोले– ''अरे मन्त्री, महलों में हम नहीं जा सकते। हमें तो वहाँ दुर्गन्ध आती है। एक पल को भी वहाँ नहीं ठहरा जाता।'' मन्त्री सकते में आ गया। सोचने लगा– महलों में दुर्गन्ध, आश्चर्य है! महात्मा जी कमाल की बातें करते हैं। लोग तो महलों के दर्शन को लालायित रहते हैं। महलों में आकर राजा से मन्त्री ने महात्मा की बात कह दी। राजा भी अचम्भे में डूब गया। महलों में और दुर्गन्ध! खैर।

राजा स्वयं ही महात्मा जी के दर्शनार्थ शहर के बाहर उनकी कुटिया पर गया। महात्मा उस समय मौन धारण कर तपस्या कर रहे थे। राजा महात्मा की आँखें खुलने की प्रतीक्षा करने लगे। कुछ पल बाद महात्मा ने अपनी आँखें खोली। अपने सामने राजा को देख महात्मा उनसे बातें करने लगे। राजा को कुछ उपदेश एवं ज्ञान की बातें कही। राजा महात्मा की बातों से बहुत प्रसन्न हुआ। अब तो राजा की महात्मा को महलों में ले जाने की इच्छा और भी प्रबल हो गई।

जब राजा लौटने लगा तो वह अपने दोनों हाथ जोड़कर बोला– ''महाराज! मेरी एक इच्छा और पूरी करें, आप महलों में पधारें।'' ''नहीं राजन्! हमें महलों में दुर्गन्ध आती है।' राजा लौट गया। कुछ नहीं बोला।

इसके बाद राजा अकसर महात्मा के पास सत्संग हेतु जाने लगा। एक दिन महात्मा बोला– ''आओ राजन्! तुम्हें कुछ पल घुमा लाऊँ।'' राजा महात्मा के साथ चल दिया। महात्मा उसे मोचियों की एक बस्ती में ले गए, जहाँ हर तरफ चमड़ा सुखाया जा रहा था। बुरी तरह दुर्गन्ध आ रही थी। राजा अपनी नाक पकड़कर बोला– ''महाराज! यहाँ से चलिएगा, यहाँ तो दुर्गन्ध से सिर फटा जा रहा है। शीघ्र चलिएगा।''

''क्यों, क्या हुआ राजन्! किस बात की दुर्गन्ध? देख नहीं रहे, यहाँ तो सब लोग खा भी रहे हैं, पी भी रहे हैं और बच्चे खेल भी रहे हैं।'' ''वे तो महाराज! इस वातावरण के आदी हो गए हैं। सदैव यहाँ रहते आए हैं। मैं कभी इस तरह के वातावरण में नहीं रहा। अतः चलिए।'' महात्मा लौट पड़े और रास्ते में आकर बोले– ''अब समझ गए राजन्! जो जिस वातावरण में रहता है, उसे वही पसन्द होता है। अब तुम ही बताओ हम संन्यासियों को महलों से क्या वास्ता? हमें तो वहाँ दुर्गन्ध ही आएगी, उस माया–मोह के सांसारिक वातावरण में। हम निर्लिप्त, वैरागी, जंगलों में रहने वाले, भगवत भजन करने वाले आदमी। इसीलिए मैं महलों में नहीं आया।'' राजा महात्मा की बात सुनकर कृतार्थ हो गया। उसे एकाएक ज्ञान हुआ और राजा ईश्वर–भजन में लग गया। अब राजा के अन्तर्ज्ञान की आँखें खुल गई थीं। सारी शासन–व्यवस्था उसका बड़ा पुत्र देखने लगा।

पूरन सरमा
जयपुर (राजस्थान)

चतुर लोमड़ी का झूठ

उस दिन लोमड़ी कई दिनों बाद स्कूल पहुँची। उसे देखकर बन्दर ने पूछ लिया– ''अरी लोमड़ी, तुम इतने दिनों बाद स्कूल में? तुझे मास्टर जी से डर नहीं लगता। कहीं मास्टर जी ने तेरा नाम ही न काट दिया हो।'' ''नाम भला क्यूँ काटेंगे। मेरा मन नाना के घर जाने का हो रहा था, सो चली गई। अब इसमें नाम काटने वाली कौनसी बात है।'' चेहरे पर मस्ती के भाव लाते हुए बोली थी लोमड़ी।

''स्कूल तेरी मनमर्जी से नहीं चलता। नियमों से चलता, मेरी भोली बहना। मुझे तो पक्का विश्वास है मास्टर जी तुझे क्लास में बैठने नहीं देंगे।'' ''बैठने कैसे नहीं देंगे? मेरी खोपड़ी बड़ी तेज है। पहले मैं कक्षा में जाकर देख लूँ। उसके बाद मैं अपने दिमाग के घोड़े दौड़ाऊँगी।'' लोमड़ी वहीं खड़ी–खड़ी सोचती रही तब तक बन्दर क्लास में पहुँच गया।

लोमड़ी कक्षा में पहुँची। मास्टर जी पढ़ा रहे थे। उसे देखते ही मास्टर जी पूछ बैठे– ''लोमड़ी! तुम

इतने दिनों बाद! अपने घर जाइए। मुझे ऐसे लापरवाह बच्चे की आवश्यकता नहीं।'' ''मास्टर जी, गलती हो गई।'' और इतना कह वह सुबक–सुबक रोने लगी। ''तुम्हारे इन मगरमच्छ वाले आँसुओं से मैं तो पिघल सकता हूँ पर यह रजिस्टर तो नहीं... इसमें तो दस दिन लगातार न आने के कारण नाम कट जाता है। अब जाइए, अपनी मम्मी को बुलाकर लाइए तभी कुछ सोचा जायेगा।'' ''लोमड़ी ने अब और भी मोटे–मोटे आँसू बहाने शुरू कर दिए।''

''जाइए, जब तक आपके परिवार का कोई सदस्य नहीं आयेगा, तब तक मैं आपको क्लास में नहीं बैठने दूँगा।'' लोमड़ी ने सोच लिया ये आँसू काम नहीं करेंगे। दूसरा तरीका अपनाना होगा। यही सोच वह बाहर आ गई। उसके पीछे–पीछे बन्दर भी कोई बहाना बनाकर क्लास से बाहर निकल आया। ''अरे लोमड़ी! तेरे मोटे–मोटे आँसू तो मिट्टी में मिल गए।''

''घबरा मत, एक तीर न चला तो इसका मतलब यह नहीं कि लोमड़ी का तरकश खाली हो गया। मेरे तरकश में और भी मीठे–मीठे अचूक बाण है। वे सीधे मास्टर जी के हृदय पर असर करेंगे।'' ''पता तो चले, अब कौन सा बाण चलाने वाली हो?'' ''तो सुनो– मास्टर जी ने कहा है कि अपने घर से किसी को बुलाकर लाओ।'' ''तो अपनी मम्मी को बुलाकर लाओगी।'' बन्दर ने लोमड़ी की बात पूरी होने से पहले कह दिया।

''मम्मी.... मम्मी को बुलाना पूरी क्लास के सामने बेइज्जत होना है।'' ''वो भला क्यों?'' ''मूर्ख जब मैं नाना के घर जा रही थी तब मम्मी ने कहा था कि तेरी क्लास लगी हुई है। तुझे इस तरह नाना के घर नहीं जाना चाहिए। मैं ही जिद पर अड़ी रही।'' ''तो अब आयेगा मजा एक तरफ कुआँ, दूसरी ओर खाई। कहीं न कहीं फँसेगी।'' बन्दर यही सोचकर मन ही मन खुश हो गया।

फिर पूछने लगा– ''अच्छा तो अब क्या करेगी?'' ''बुला लाऊँगी जंगल में घूमती किसी बूढ़ी

लोमड़ी को। मास्टर जी से कह दूँगी मेरी दादी जी हैं।'' लोमड़ी ने वैसा ही किया। एक बूढ़ी लोमड़ी को अपने साथ लेकर पहुँच गई मास्टर जी के पास। ''मास्टर जी नमस्ते।'' बुढ़िया ने मास्टर जी को नमस्कार करते हुए कहा। ''प्रणाम माता जी।'' ''माता जी! यह लोमड़ी बहुत दिनों से स्कूल नहीं आ रही। आपने ही इसे नाना के घर भेजा था क्या?'' मास्टर जी ने बड़ी ही विनम्रता से पूछा।

''हाँ मास्टर जी। इसके बूढ़े नाना जी का मन कर रहा था इससे मिलने को।'' ''पढ़ाई के दिनों में इसे नहीं जाना चाहिए था। वैसे भी यह पढ़ाई में कमजोर है।'' ''क्या? पढ़ाई में कमजोर,क्यों री तू पढ़ती नहीं? क्या कह रहे मास्टर जी बोल... बोल... बोलती क्यों नहीं... तेरे मम्मी–पापा इसलिए इतना पैसा खर्च करते हैं। मास्टर जी इसके पापा ने सभी बच्चों का ट्यूशन लगवा रखा है।''

''क्या इसके पापा ने।'' ''हाँ मास्टर जी, इसके पापा ने। वह दूसरे जंगल में काम करता है। महीने में एक बार घर आता है।'' ''पर माता जी, इसके पापा को इस दुनिया से गए छह महीने हो गए। इसने खुद ही बताया था। हम इसके घर भी गए थे।'' ''क्या!'' यह सुनकर माता जी के होश उड़ गए। उसे खयाल ही नहीं रहा कि यह लोमड़ी तुम्हारी सगी बिटिया नहीं बल्कि किसी और की है। उसे और ज्यादा शर्मिंदगी न उठानी पड़े इसलिए वहाँ से चुपचाप निकल आई।

वह तो निकल आई पर मास्टर जी के क्रोध का पारा सातवें आसमान पर पहुँच गया। लोमड़ी ने सोच लिया अब यहाँ खड़ा रहना खतरे से खाली नहीं है और वह भी बुढ़िया के साथ–साथ बाहर निकल आई। बन्दर पीछे बैठा मजे ले रहा था। लोमड़ी के बाहर आते ही वह भी झट से बाहर निकल आया और उसे पीछे से आवाज लगाई– ''लोमड़ी रानी कहाँ चली?''

लोमड़ी चुपचाप चलती गई। ''अब कौन–सा तीर चलाओगी ?'' लोमड़ी एकदम रुकी और गुस्से से फुंकारती हुई बोली– ''तुम्हें तो मजा आ रहा होगा। देख लेना मैं शीघ्र ही कक्षा में बैठूँगी। देख लेना।'' इतना कहकर लोमड़ी स्कूल से बाहर निकल गई। लोमड़ी हर रोज स्कूल आती परन्तु कक्षा में न जाती। एक दिन मास्टर जी नहीं आए। यह देखकर लोमड़ी मन ही मन हर्षित हो उठी और खुशी से उछलती इधर–उधर घूम रही थी।

''आज क्या हुआ लोमड़ी महारानी।'' बन्दर ने पूछा। ''आज मेरा तीसरा तीर चलेगा और वो भी सीधा मुख्याध्यापक जी पर।'' ''देखना कहीं अपने तीर से खुद ही घायल न हो जाओ क्योंकि अब तक दोनों तीरों ने तुम्हें ही तो बेंधा है।'' ''नहीं अब आर या पार । जरा यह भी बतलाती जा कि वहाँ कौन सा तीर चलाओगी?'' ''नहीं अभी नहीं...''

''डर है कहीं पहले की तरह हमें हँसने को मौका मिले।'' ''कुछ भी समझ, अब तो मैं हैडमास्टर के पास जा रही हूँ।'' बन्दर भी उस्ताद था हेड़ मास्टर के कमरे की खिड़की के पास जा खड़ा हुआ। लोमड़ी हैडमास्टर के पास जाते ही जोर–जोर से रोने लगी। उसे रोते देख हैडमास्टर बोले– ''बिटिया तुम रो क्यों रही हो? जरा मुझे बताओ समस्या क्या है?'' ''सर... सर मैं कई दिनों से बीमार थी। मास्टर जी ने मेरा नाम काट दिया।'' उसने रुक–रुक कर अपनी बात पूरी की। ''बेटे पहले चुप हो जाइए। और बताइए समस्या क्या है।'' ''सर मैं बीमार थी।'' ''चलिए कोई बात नहीं... अब तुम ऐसा करो कि अपने मम्मी–पापा को बुला लाओ, या।...''

लोमड़ी ने 'या' के ऊपर पूरा जोर दिया। ''या डाक्टर की रिपोर्ट ले लाओ। हम डाक्टर की रिपोर्ट रजिस्टर में लगा देंगे ताकि दोबारा नाम जोड़ने में कोई दिक्कत न आए। जाइए जितनी जल्दी हो उसे लेकर आइए ताकि तुम्हारे नाम जोड़ने का निर्देश दे सकूँ।'' लोमड़ी को वहीं खड़े–खड़े ही धरती घूमती हुई नजर आने लगी। उसे वहीं खड़ी देख हैडमास्टर कहने लगे– ''जाइए बेटे, जरा सँभलकर लगता बीमार होने के कारण कमजोरी आ गई हैं शरीर में।''

लोमड़ी किसी तरह बाहर आई। उसकी स्थिति तो ऐसी हो गई कि कोई आसमान से गिरे और खजूर में अटक जाए। ''तो यहाँ भी फेल हो गया तीर। अरे मूर्ख लोमड़ी गुरुजी रग–रग से वाकिफ होते है।

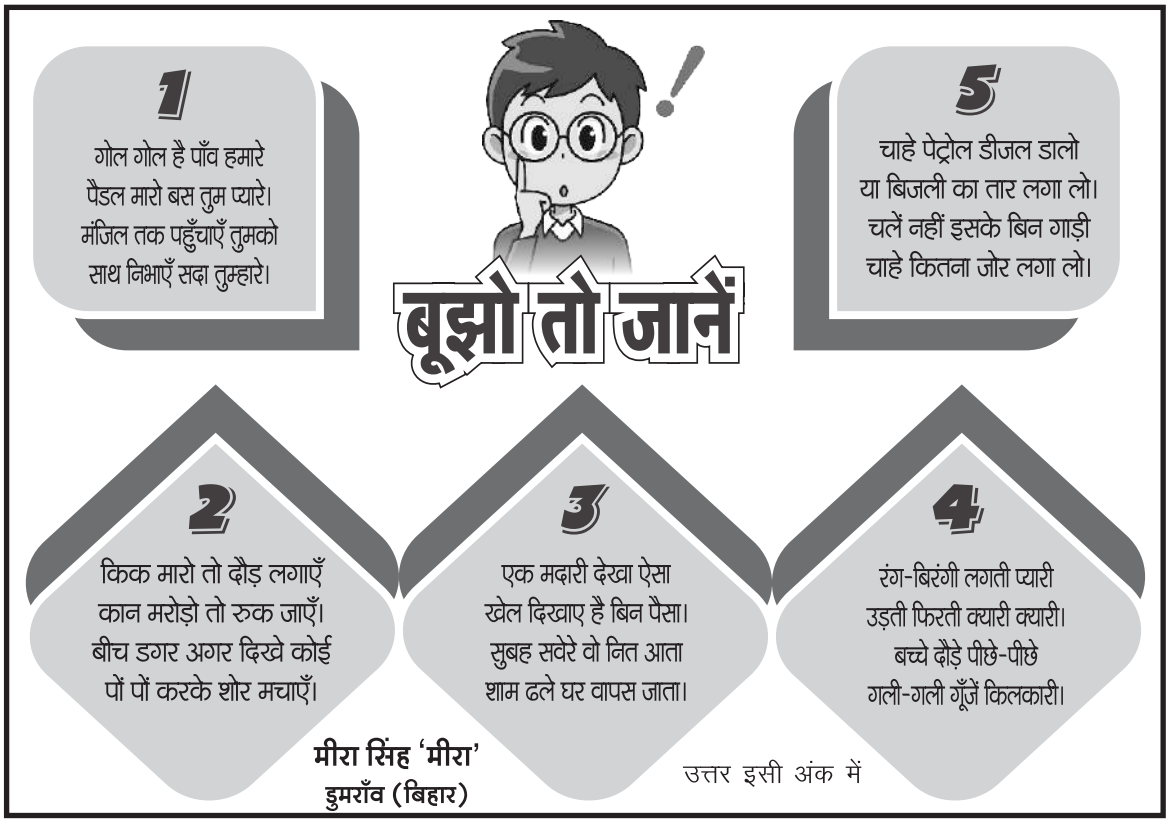

वे तो चेहरा देखकर ही बता देते हैं कि सामने वाला कितना सच और कितना झूठ बोल रहा है।'' बन्दर कहे जा रहा था। ''अच्छा तो तुमने हमारी सारी बातें सुन ली।'' ''अब यह सोच, तुझे आगे क्या करना है? अब कौनसा तीर?'' बन्दर बोला।

''नहीं, अब कोई तीर वीर नहीं, क्षमा, क्षमा मागूँगी।'' ''नहीं माफ करेंगे। अब तो अपनी मम्मी को ही बुला ला।'' ''माँ मारेगी।'' ''वो माँ है, सब तेरे हित में कहती थी। अब तू नहीं लाएगी तो काटती रहो चक्कर स्कूल के चारों ओर।'' लोमड़ी को उस समय कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। अगले दिन उसने शान्त मन से सोचा और इस निर्णय पर पहुँची कि मम्मी के बगैर काम नहीं चलेगा।

अब वह अपनी मम्मी को साथ लेकर स्कूल पहुँची। मास्टर जी ने उसकी मम्मी के सामने उसकी सभी करतूत बताई– ''बड़ी चालाक बनती है। हमें ... हमें बेवकूफ बनाने की कोशिश करती है। इसे हम कक्षा में नहीं बिठायेंगे।'' ''मास्टर जी, मैं तो अनपढ़ हूँ जैसा इसने कहा मान लिया। आप तो बच्चों के भगवान, इनकी गलतियों को माफ कर देते हैं।'' ''तो बच्चों को भी तो समझना चाहिए।''

''मास्टर जी, मैं क्षमा माँगती हूँ। आगे ऐसी गलती नहीं होगी। कभी नहीं।'' ऐसा कहते हुए उसकी आँखों से आँसू निकल पड़े। ''देखा, तुम्हारी मम्मी कितना सोचती है तुम्हारे बारे में और तुम हो ... रुला रही हो अपनी मम्मी को।'' ''सर जी, मुझे माफ कर दो। मैं अपने आपको बड़ी चतुर समझ रही थी और झूठ पर झूठ बोलती चली गई और फिर अपने ही बनाए जाल में फँसती चली गई। मेरी वजह से मेरी मम्मी को माफी माँगनी पड़ी। सर, मैं आगे से ऐसा कोई कार्य नहीं करूँगी जिससे ऐसे दिन देखने पड़ें।'' ''ठीक है यदि तुम्हें अपनी गलती का अहसास हो गया है। तो तुम कक्षा में बैठ सकती हो। लोमड़ी चुपचाप गर्दन लटकाए कक्षा में बैठ गई।

राधेश्याम भारती
करनाल (हरियाणा)

खुशहाली ल

'आकाश में तारे क्यों टिमटिमाते है?'

'समुद्र का रंग नीला क्यों है?'

'इंद्रधनुष में सात सुन्दर रंग क्यों दिखते हैं?'

बच्चों के मन में ऐसे अनेक प्रश्न उठते हैं वे उनका उत्तर जानने की जिज्ञासा रखते हैं और प्रयास करते हैं। कुछ ऐसा ही एक प्रश्न भारत के महान भौतिक वैज्ञानिक सीवी रमन के मन में भी आया जब वर्ष 1921 में रमन लंदन से मुंबई के लिए लौट रहे थे, तब उन्हें भूमध्य सागर के गहरे नीले रंग ने आकर्षित किया और उनके दिमाग में सवाल आया कि यह रंग नीला क्यों है?

28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस क्यों ?

इसका जवाब पाने के लिए उन्होंने बहुत सारे प्रयोग किए और अंततः 28 फरवरी 1928 को उन्हें सफलता मिली। उनका यह प्रयोग रमन प्रभाव के नाम से प्रसिद्ध हुआ और उनकी इस अभूतपूर्व खोज के लिए वर्ष 1930 में सर सीवी रमन को भौतिकी का नोबेल पुरस्कार मिला। यह दिन भारतीय इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण दिन बन गया और उनके इस प्रयास को भविष्य में हमेशा याद रखने के लिए वर्ष 1986 में नेशनल काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन (NCSTC) द्वारा भारत सरकार से इस दिन को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस घोषित करने का अनुरोध किया गया। 28 फरवरी सन 1987 को पहली बार राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का उद्देश्य

इस दिन को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस घोषित करने का मुख्य उद्देश्य रमन प्रभाव और डॉ. चंद्रशेखर रमन को सम्मान देना तो था ही इसके अलावा लोगों के बीच में विज्ञान के प्रति जागरूकता पैदा करना और इसके जरिए बच्चों को विज्ञान को बतौर अपने करियर को चुनने के लिए भी प्रोत्साहित करना था।

डॉ. चंद्रशेखर वेंकटरमन (सी वी रमन)

जन्म – 7 नवम्बर 1888

जन्म स्थान – तिरुचिरापल्ली, तमिलनाडु

पिता – आर. चंद्रशेखर अय्यर

माता – पार्वती अम्मल

देहान्त – 1970 में प्रयोगशाला में काम के दौरान दिल का दौरा।

उपाधि – 1924 में करियर की शुरूआत में रॉयल सोसाइटी के फैलो बने और 1929 में नाइटहुड की उपाधि।

1930 में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार

1941 में फ्रैंकलीन मेडल से सम्मानित

1947 में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय व्याख्याता का पद

1954 में भारत रत्न से सम्मानित

1975 में लेनिन शान्ति पुरस्कार

ाता है विज्ञान

ताकि हमारे देश की आने वाली पीढ़ी विज्ञान के क्षेत्र में अपना योगदान दे सके और देश की तरक्की में पूर्ण भागीदारी करे।

कैसे मनाएँ विज्ञान दिवस

प्रति वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने के लिए एक थीम की घोषणा की जाती है जिसके आधार पर जगह–जगह विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होते हैं। स्कूल, कॉलेजों, शैक्षिक संस्थानों, वैज्ञानिक संस्थानों इत्यादि में साइंस क्विज, विज्ञान प्रदर्शनी, विज्ञान सम्बन्धी प्रतियोगिताएँ आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिससे लोगों में विज्ञान के अनुप्रयोगों के प्रति जागरूकता आए और वह उसका सही दिशा में उपयोग कर पाएँ। विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में किए गए नवाचारों का प्रदर्शन भी विभिन्न संस्थाओं द्वारा इस दिन किया जाता है।

इस वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम, "**Global science for global well & being**" अर्थात "वैश्विक खुशहाली के लिए वैश्विक विज्ञान" है। जिसका उद्देश्य यह है कि मानव द्वारा विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग किस तरह से किया जाए कि समाज में वैश्विक खुशहाली लाई जा सके।

बच्चो! लेकिन एक बात जरूर याद रखना कि विज्ञान के साथ चलो, नई तकनीकों को जरूर सीखो परन्तु उन पर कभी निर्भर मत होना और विज्ञान और तकनीक को अपने ऊपर कभी हावी मत होने देना।"

Technology is a Tool use it as a tool

आओ, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाएँ,
मिलजुल कर खुशहाली लाएँ,
सबका हित हो, साथ चले सब,
विज्ञान के नित नये नवाचार बनाएँ॥

डॉ. निधि माहेश्वरी
हापुड़ (उत्तर प्रदेश)

रमन प्रभाव क्या है?

1998 में अमेरिकन केमिकल सोसायटी और इंडियन एसोसिएशन फॉर द कल्टीवेशन ऑफ़ साइंस ने रमन की खोज को अंतरराष्ट्रीय ऐतिहासिक रासायनिक लैंड मार्क के रूप में मान्यता दी। यह रमन प्रभाव क्या है? डॉ. सीवी रमन की यह खोज यह बताती है कि जब प्रकाश किसी पारदर्शी माध्यम से गुजरता है तो उसकी प्रकृति और स्वभाव में अर्थात आयाम और तरंग दैर्ग्य (wave length)में कुछ परिवर्तन हो जाता है। यह माध्यम ठोस, द्रव और गैस कुछ भी हो सकता है। यह घटना तब घटती है, जब माध्यम के अणु प्रकाश ऊर्जा के कणों को छितरा या फैला देते हैं। यह बिलकुल ऐसे होता है जैसे कैरम बोर्ड पर स्ट्राइकर गोटियों को छितरा देता है। यह प्रभाव रमन प्रकीर्णन (Raman Scattering) भी कहलाता है।

रमन प्रभाव का उपयोग पदार्थों की आंतरिक संरचना समझने, पदार्थों के संश्लेषण, भूविज्ञान, भौतिक विज्ञान, फॉरेंसिक विज्ञान, परमाणु विज्ञान और औषधि विज्ञान जैसे क्षेत्रों में किया जाता है। जब भारत से अंतरिक्ष मिशन चंद्रयान ने चाँद पर पानी होने की घोषणा की तो इसके पीछे रमन स्पेक्ट्रोस्कोपी का ही हाथ था।

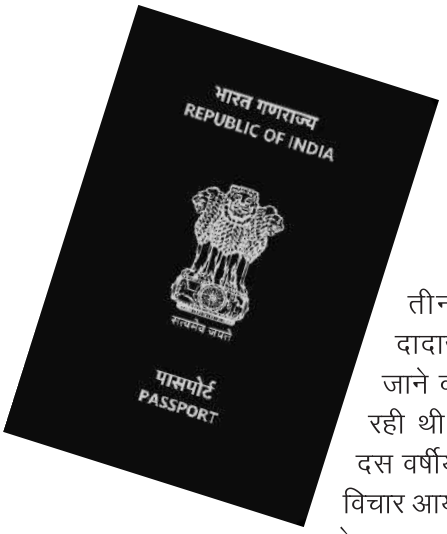

विदेश यात्रा के लिए चाहिये पासपोर्ट

घर में पिछले तीन दिनों से दादाजी के विदेश जाने की तैयारियाँ चल रही थी। तभी अनायास दस वर्षीय पिन्टू के मन में विचार आया कि मैं भी दादा के साथ जाऊँगा। तब दादा ने पिन्टू को समझाया कि बिना पासपोर्ट के विदेश यात्रा नहीं की जा सकती। तब दादाजी ने पिन्टू को पासपोर्ट के बारे में बताया।

पासपोर्ट एक सरकारी "यात्रा दस्तावेज" है जिसमें व्यक्ति की सम्पूर्ण जानकारी होती है। पासपोर्ट धारक व्यक्ति अपने देश से अन्य देशों की यात्रा कर सकता है तथा यात्रा समाप्ति पर अपने देश में पुनः प्रवेश कर सकता है। साथ ही अन्य देश में वह आवश्यकता होने पर अपने देश के दूतावास से सहायता भी प्राप्त कर सकता है।

पासपोर्ट दो शब्दों से बना है ''पास'' अर्थात आना एवं जाना अथवा गुजरना/यात्रा करना है तथा 'पोर्ट' शब्द का अर्थ समुद्री बन्दरगाह शब्द से है। पूर्व में सभी विदेशी यात्राएँ समुद्री बन्दरगाहों से नावों या जलपोतों से ही होती थी अतः यह शब्द "पासपोर्ट" का उद्भव उस समय का है। पासपोर्ट धारक न केवल इसका उपयोग यात्रा के लिए करता है बल्कि यह उसकी सम्पूर्ण पहचान एवं उसे अपने देश की नागरिकता सिद्ध करने के लिए भी उपयोग करता है।

पासपोर्ट की सूचनाएँ

सामान्यतया सभी देशों के पासपोर्ट में व्यक्ति का पूरा नाम, उसका नवीनतम फोटो, जन्म स्थान जन्म तिथि, व्यक्ति के हस्ताक्षर, पासपोर्ट जारी करने की तिथि एवं उसकी समाप्ति तिथि आदि जानकारी पायी जाती है। समाप्ति तिथि के पश्चात व्यक्ति यात्रा नहीं कर पाता है। तब नया पासपोर्ट बनवाना पड़ता है जिसे नवीनीकरण कहते हैं।

भारतीय पासपोर्ट

भारतीय नागरिकों को देश के विदेश मन्त्रालय द्वारा पासपोर्ट जारी किया जाता है, जिसका उपयोग अन्तरराष्ट्रीय यात्रा हेतु किया जाता है। भारत के पासपोर्ट अधिनियम 1967 के अनुसार पासपोर्ट व्यक्ति की भारतीय नागरिकता एवं राष्ट्रीयता होने का प्रमाण है। विदेश मन्त्रालय की आधिकारिक जानकारी के अनुसार 1 फरवरी, 2022 तक भारत के 5 करोड़ लोगों के पास भारतीय पासपोर्ट है।

पासपोर्ट कहाँ बनता है?

भारत के नागरिकों को पासपोर्ट जारी (issue) करने के लिए विदेश मन्त्रालय ने 37 क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय सम्पूर्ण भारत में खोले है जहाँ पर क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी के हस्ताक्षर से पासपोर्ट जारी किया जाता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा, नौकरी अथवा अन्य कारणों से विदेशों में बसे भारतीयों को भी उस देश में स्थित भारतीय दूतावास भी पासपोर्ट जारी करने के लिए अधिकृत है।

फोटो

पूर्व में पासपोर्ट साइज फोटो शब्द पासपोर्ट में लगाए जाने वाले फोटो से ही बना है फिर भी प्रत्येक फोटोग्राफर, स्थान, देश आदि में इसकी साइज अलग–अलग समझी जाती है। अतः अब पासपोर्ट प्राधिकरण ने 'टाटा कन्सल्टेन्सी' को यह कार्य भी दे दिया है जो सभी पासपोर्ट सेवा केन्द्र पर एक ही प्रकार का फोटो लेकर पासपोर्ट बनवाने में मदद कर रहा है।

अवधि

सामान्यतया 18 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों का सामान्य पासपोर्ट 10 वर्ष की अवधि का बनता है। 15 वर्ष तक के बच्चों का पासपोर्ट 5 वर्ष की अवधि का होता है। इसका एक प्रमुख कारण बच्चों की शक्ल में परिवर्तन होना भी है। सामान्यतया पासपोर्ट बनाने की पूर्ण प्रक्रिया 10 दिन से एक माह में

देखें पृष्ठ 37....

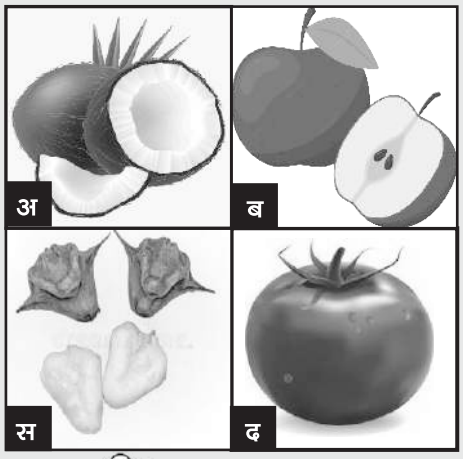

दस सवाल दस जवाब

(1) इन फलों के खाने योग्य भाग का नाम बताओ।

(2) किस पौधे का बीज सबसे छोटा होता है?

(3) किस खास कवक की बड़े पैमाने पर खेती की जाती है?

(4) किन दो पौधों के सहजीवन को 'लाइकेन' कहते है?

(5) सबसे बड़े पुष्प का नाम बताओ?

उत्तर इसी अंक में

(6) मटर की जड़ों में कौन सा जीवाणु पाया जाता है?

(7) शक्कर का प्रथम प्रमुख स्रोत गन्ना है तो बताइये दूसरा स्रोत क्या है?

(8) किस फल में विटामिन 'सी' की मात्रा सबसे अधिक होती है?

(9) कौनसा पौधा अपनी घड़े जैसी संरचना में कीट को पकड़कर खाता है?

(10) विज्ञान की किस शाखा में पेड़ों का अध्ययन किया जाता है?

- चोर चोरी कर रहा था कि मालिक जग गया।
  मालिक : (चोर से) सारा सामान वापस अलमारी में रख दो।
  चोर : बाप रे! सारा सामान अलमारी में कैसे रख सकता हूँ? आधा तो तुम्हारे बगल वाले पड़ोसी का है।

- फेरी वाला : जनाब बीस रुपये किलो में सेब मैं आपको नहीं दे सकता। इस भाव में तो मुझे घर पर ही पड़े हैं।
  ग्राहक : कोई बात नहीं, अपने घर का पता बता दो मैं घर पर आकर ले जाऊँगा।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

प्रेरक वचन

एक देश की महानता, बलिदान और प्रेम उस देश के आदर्शों पर निहित करता है।

❖

आत्म सम्मान इनसान का सबसे बड़ा गहना होता है।

❖

यदि आप मजबूत हैं, तो आपको खेलने और काम में कमजोर लड़के या लड़की की मदद करनी होगी।

❖

इस देश को साफ बनाने के लिए लोगों को पहले अपने विचारों और दिमाग को साफ बनाना होगा।

❖

एक देश को महान बनाने के पीछे कई वर्ष लगते हैं।

सरोजिनी नायडू

क्या है नाम हमारा?

सीना ताने सागर तट पर,
मेरे वृक्ष खड़े हैं।
गगन चूमती ऊँचाई पर,
फल और फूल लगे हैं।।

पानी पियो प्रेम से मेरा,
फोड़ो कच्चा खाओ।
डोसा इडली के संग मेरी,
चटनी मधुर बनाओ।।

मेरे बिन शुभ कार्य न होते,
श्रीफल है पर्यायी।
कसकर मुझको बने बुरादा,
उससे बने मिठाई।।

जटा जूट सिर पर होते हैं,
फिर भी सबको प्यारा।
उत्तर बता दिया बातों में,
क्या है नाम हमारा।।

डॉ. कैलाश गुप्ता 'सुमन'
मुरैना (मध्य प्रदेश)

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

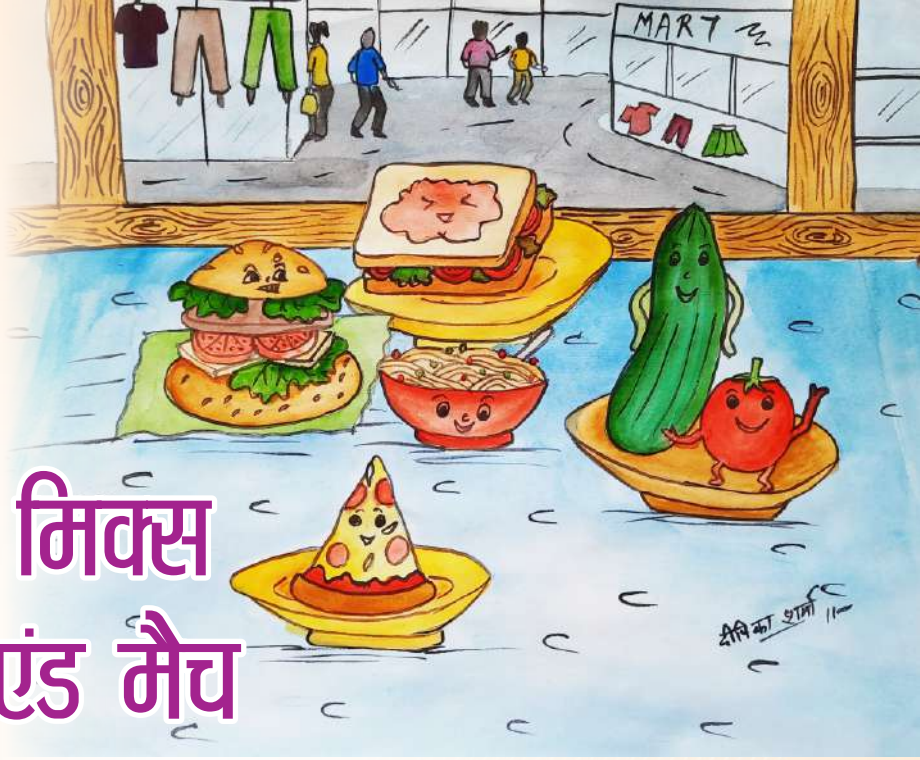

मिक्स एंड मैच

मोटा बर्गर अपनी थुलथुली देह के साथ हिलता–डुलता चला आ रहा था। अचानक उसके सामने दुबली–पतली ककड़ी आ गई। बर्गर ने अपने आप को बहुत सँभाला लेकिन ककड़ी से टकरा ही गया। ककड़ी को तो कुछ नहीं हुआ केवल जरा सी धूल ही लगी लेकिन बर्गर जमीन पर चित हो गया। उसके अन्दर भरा हुआ सामान बाहर फैल गया। यह देखकर पिज्जा और पास्ता खिलखिलाकर हँस पड़े। ककड़ी ने भी उनका साथ दिया। बर्गर बेचारा झेंप गया। उसे गुस्सा भी बहुत आया। पिज्जा और पास्ता ने दोस्त होते हुए भी ककड़ी का साथ जो दिया था।

"कितनी बार कहा है कि कम खाया करो, देखते नहीं कितना फूल गए हो?" ककड़ी ने नाराज होते हुए कहा। "तुमसे फिटनेस सर्टिफिकेट नहीं चाहिए मुझे। घासफूस कहीं की।" बर्गर ने मिट्टी पौंछते हुए ककड़ी को घुड़का। ककड़ी मुस्कुराती हुई अपनी टोकरी में चली गई। बर्गर बन और खीरा ककड़ी, दोनों "चटोरे फास्ट फूड कॉर्नर" पर रहते हैं। ककड़ी सैंडविच में और बन बर्गर बनाने के काम आता है। रात को जब रेस्टोरेंट बन्द हो जाता है तब सभी आपस में बातचीत करके अपना मन बहलाते हैं क्योंकि कोई नहीं जानता कि वे कितने समय तक साथ रहने वाले हैं। हर रोज की तरह आज भी रेस्टोरेंट रात को दस बजे बन्द हो गया। पास्ता, पिज्जा, नूडल्स आदि बातचीत शुरू होने का इंतजार कर रहे थे लेकिन पूरे रेस्टोरेंट में चुप्पी पसरी हुई थी।

"क्या बात है भई! आज सब चुप क्यों हो?" पिज्जा बेस ने जरा जोर से कहा लेकिन आश्चर्य! किसी ने भी उसकी बात का जवाब नही दिया। "लगता है बर्गर बुरा मान गया।" नूडल्स फुसफुसाए। "इसमें बुरा मानने की क्या बात है? वो है ही इतना मोटा। उसे सचमुच डाइटिंग की जरूरत है।" ककड़ी के पास वाली टोकरी में रखे लाल टमाटर ने उचककर कहा। वह भी सैंडविच को हेल्दी बनाने में ककड़ी का साथ देता है। "अच्छा! मैं मोटा हूँ? तुम तो बहुत पतले हो ना? अपनी तरफ तो देखते नहीं, दूसरों को ताना मारते हैं।" गुस्से से भरा बर्गर चिल्लाया।

"अरे–अरे! लड़ो मत। हम सब साथी हैं। यूँ लड़ना अच्छा नहीं लगता। चिल करो यार।" कहते हुए पैटीज भी बातचीत में शामिल हो गई।" जानते हो ना कि बच्चे मुझे कितना पसन्द करते हैं। ये रेस्टोरेंट मेरे ही दम पर चलता है।" बर्गर ने छाती फुलाकर कहा। "लोग पीठ पीछे तुम्हें बीमारी का घर भी तो कहते हैं।" ककड़ी ने दाँत निकालकर खी–खी करते हुए कहा। बर्गर ने उसकी तरफ खा जाने वाली नजरों से देखा।

"बस–बस! बहुत हो गया। सबकी अपनी–अपनी पसन्द होती है।" कहते हुए पिज्जा बेस ने सबको शान्त रहने को कहा। सबने उसकी बात मान

ली और चुपचाप सोने की कोशिश करने लगे। अगले दिन सुबह रेस्टोरेंट का फूड कार्नर ग्राहकों की सेवा के लिए सजधज कर तैयार था। पिज्जा अपनी टोपिंग्स के साथ बेक होने की प्रतीक्षा कर रहा था। बर्गर भी आलू टिकिया और प्याज–टमाटर तथा सलाद के पत्तों के साथ अपनी बारी का इन्तजार कर रहा था। खीरा–टमाटर और मेयो लगा हुआ सैंडविच ग्रिल होने के लिए बेचैन हो रहा था। पास्ता और नूडल्स भी उबले हुए रखे थे। सबको ग्राहकों का इन्तजार था।

तभी सबने देखा कि दो बच्चे अपने पापा के साथ उधर ही आ रहे थे। फूड आइटम्स खुश हो गए। वे मुस्कुरा कर बच्चों का स्वागत करने लगे। "ये लड़का तो बिलकुल बर्गर जैसा लग रहा है। गोलमटोल।" टमाटर चहका। "बर्गर सा क्यों? टमाटर जैसा क्यों नहीं?" बर्गर बिदका। "मोटे होने पर कभी सुना है किसी से ये कहते हुए कि बिलकुल टमाटर से हो गए हो। टमाटर जैसा होना मतलब एकदम स्वस्थ होना होता है। स्वस्थ बच्चों के गाल लाल टमाटर जैसे दिखते हैं।" टमाटर ने फिर उसे चिढ़ाया।

"और उस लड़की को नहीं देखा तुमने? दुबली पतली ककड़ी सी।" बर्गर किसी भी कीमत पर बहस में टमाटर से हारना नहीं चाहता था। "हाँ तो दुबला–पतला होना तो अच्छी बात है ना।" ककड़ी बीच में बोली। बर्गर कुछ कहने ही वाला था कि बच्चे उनकी तरफ आने लगे। सब चुप हो गए। "पापा, मुझे ये बर्गर लेना है।" शीशे के पीछे रखे बर्गर पर अँगुली करके बच्चे ने कहा। बर्गर फूल कर कुप्पा हो गया। उसने अकड़कर टमाटर की तरफ देखा। "और मुझे ये वेज सैंडविच।" बच्ची ने दूसरी तरफ इशारा किया। "ठीक है, सबको सब मिलेगा लेकिन मिक्स एन्ड मैच करके।" पापा ने हँसते हुए कहा। "मिक्स एन्ड मैच? वो कैसे?" बच्चों ने एक साथ पूछा।"

मिक्स एंड मैच यानी टेस्टी भी और हेल्दी भी। भैया, बर्गर में से आलू टिक्की बाहर निकाल कर टमाटर के दो स्लाइस एक्स्ट्रा डाल दो और सैंडविच में थोड़े से चुकन्दर के लच्छे डालकर बटर लगा देना।" पापा ने रेस्टोरेंट के मालिक से कहा। मालिक ने वैसा ही किया। अब टमाटर बर्गर का साथी बन गया था। दोनों एक दूसरे की तरफ देखकर मुस्कुराए।

"अब देखो, हो गया ना सारा फूड टेस्टी भी और हेल्दी भी।" पापा ने बच्चों के हाथ में उनका मनपसन्द फूड पकड़ाते हुए कहा। बच्चे खुशी–खुशी खाने लगे। बर्गर, ककड़ी और टमाटर में भी दोस्ती हो गई।

इंजी. आशा शर्मा
बीकानेर (राजस्थान)

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है, इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

		6				5		7
	9			6	8			
7		8			5			4
		1	5		4	2	9	
	7			3				
3		9				7	1	
	5			4		8		9
	8	2	6					
				2	7	4		6

उत्तर इसी अंक में

व्हाट्सएप कहानी

एक सज्जन लगभग पैंतालीस वर्ष के थे तब उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया था। लोगों ने दूसरी शादी की सलाह दी परन्तु उन्होंने यह कहकर मना कर दिया कि पुत्र के रूप में पत्नी की दी हुई भेंट मेरे पास हैं, इसी के साथ पूरी जिन्दगी अच्छे से कट जाएगी। पुत्र जब वयस्क हुआ तो पूरा कारोबार पुत्र के हवाले कर दिया। स्वयं कभी अपने तो कभी दोस्तों के ऑफिस में बैठकर समय व्यतीत करने लगे। पुत्र की शादी के बाद पूरा घर बहू को सुपुर्द कर दिया।

पुत्र की शादी के लगभग एक वर्ष बाद दोपहर में खाना खा रहे थे, पुत्र भी लंच करने ऑफिस से आ गया था। उसने सुना कि पिताजी ने बहू से खाने के साथ दही माँगा और बहू ने जवाब दिया कि आज घर में दही नहीं है। खाना खाकर पिताजी बाहर चले गये।

थोडी देर बाद पुत्र अपनी पत्नी के साथ खाना खाने बैठा। खाने में प्याला भरा हुआ दही भी था। पुत्र ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और खाना खाकर स्वयं भी ऑफिस चला गया। कुछ दिन बाद पुत्र ने अपने पिताजी से कहा– ''पापा आज आपको कोर्ट चलना है, आज आपका विवाह होने जा रहा है।'' पिता ने आश्चर्य से पुत्र की तरफ देखा और कहा– ''बेटा मुझे पत्नी की आवश्यकता नहीं है और मैं तुझे इतना स्नेह देता हूँ कि शायद तुझे भी माँ की जरूरत नहीं है, फिर दूसरा विवाह क्यों?'' पुत्र ने कहा– ''पिताजी, न तो मै अपने लिए माँ ला रहा हूँ न आपके लिए पत्नी, मैं तो केवल आपके लिये दही का इन्तजाम कर रहा हूँ। कल से मैं किराए के मकान में आपकी बहू के साथ रहूँगा तथा आपके ऑफिस में एक कर्मचारी की तरह वेतन लूँगा ताकि आपकी बहू को दही की कीमत का पता चले।''

पुत्र की बात से पिताजी कुछ समझे नहीं और कहा– ''कौन से दही की कीमत की बात कर रहे हो तुम? मैं कुछ समझा नहीं।'' इतने में दरवाजे के बाहर पर्दे की ओट में सारी बात सुनकर बहू निकल कर आई और बोली– ''पापा जी, मैं बताती हूँ सारी बात। कुछ दिन पहले घर में दही होते हुए भी मैंने आपको दही के लिए इनकार कर दिया था। यह मेरी बहुत बड़ी भूल थी। मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था।'' कुछ पल रुककर बहू ने कहा– ''पिताजी, मुझे माफ कर दीजिये। भविष्य में ऐसा कुछ नहीं होगा। मैं आपको कोई कमी महसूस नहीं होने दूँगी।'' यह कहते हुए बहू पिताजी के चरणों में गिर पड़ी।

दो बाल कुंडलियाँ

यह छंद दोहा और रोला के संयोग से बनता है। इसमें छः पंक्तियाँ होती हैं। प्रथम दो में दोहे के अनुसार 13–11 की मात्रा और शेष चार चरण रोला के होते हैं, जिसमें हर पंक्ति में 11–13 की मात्रा होती है। इस प्रकार प्रत्येक पंक्ति में 24 मात्राएँ होती हैं। इसकी एक विशेषता यह भी है कि यह छंद जिस शब्द से प्रारम्भ होता है उसी शब्द पर समाप्त होता है तथा दूसरी पंक्ति के अन्तिम भाग से ही तीसरी पंक्ति प्रारम्भ होती है। इन विशेषताओं के आधार पर यहाँ दी गई दो बाल कुंडलियों को आप पढ़े और समझे–

कलियाँ कोमल मखमली, निखरा–निखरा रूप।
तितली लेटी फूल पर, सेंक रही है धूप।
सेंक रही है धूप, पंख हैं रंग–रँगीले।
किसने मोहक रंग, भरे हैं नीले–पीले।
कह 'कोमल' कविराय, महकती सारी गलियाँ।
महक रहे हैं फूल, महकती कोमल कलियाँ। (1)

वेला सुखद प्रभात की, देती है आनंद।
कलियाँ हैं बिखरा रहीं, गंध और मकरंद।
गंध और मकरंद, पेड़ भी झूमे डोले।
शीतल मंद समीर, डोलता हौले–हौले।
कह 'कोमल' कविराय, दृश्य मोहक अलबेला।
देती सुख आनंद, प्रात की अमृत वेला। (2)

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'
लहार भिण्ड (मध्य प्रदेश)

गाँव पल्ली

गाँव बाचा

ये गाँव पूरी तरह सौर ऊर्जा चालित

दोस्तो! आपको यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि हमारे देश में कुछ गाँव ऐसे भी हैं जो पूरी तरह एनवायरमेंट फ्रेंडली हैं और इनका कार्बन फुटप्रिंट जीरो है।

जम्मू कश्मीर का पल्ली गाँव

यह गाँव है पल्ली, जो जम्मू कश्मीर के सीमाई जिले सांबा में स्थित है। यह जम्मू से 17 किलोमीटर दूर स्थित है। इसे कार्बन न्यूट्रल पंचायत होने का गौरव 24 अप्रैल 2022 को हासिल हुआ है। हमारे प्रधानमन्त्री ने इस गाँव को 500 किलोवाट के सौर ऊर्जा संयंत्र का उपहार दिया है। इस उपलब्धि में सोलर प्लांट की बड़ी भूमिका है। इस प्रोजेक्ट को मात्र 3 हफ्तों में 2.75 करोड रुपए की लागत से पूरा किया गया। केंद्र सरकार के ग्राम ऊर्जा स्वराज कार्यक्रम के तहत यहाँ 6408 वर्ग मीटर क्षेत्र में 1500 सोलर पैनल लगाए गए हैं जो इस ग्राम पंचायत के 340 घरों को क्लीन इलेक्ट्रिसिटी देंगे।

यह ग्रीन एनर्जी स्थानीय पावर ग्रिड स्टेशन के माध्यम से वितरित की जाएगी। कार्बन न्यूट्रीलिटी हासिल करने के लिए गाँव के लोगों ने फॉसिल फ्यूल यानी डीजल, पेट्रोल, कोयला जैसे ईंधन का प्रयोग कम से कम किया, वन संपदा का संरक्षण किया और व्यापक पैमाने पर पौधारोपण भी करते रहे। यहाँ 450 लोगों को सोलर चूल्हे दिए गए हैं जो खाना पकाने में काम आएँगे।

मध्यप्रदेश का बाचा गाँव

देश का पहला सोलर विलेज बनने का गौरव मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में स्थित बाचा गाँव को है। यह पूरा गाँव सौ फीसदी सोलर एनर्जी से रोशन हो रहा है। विभिन्न संस्थान दावा कर रहे हैं कि यह देश का पहला ऐसा गाँव है जहाँ किसी घर में लकड़ी का चूल्हा नहीं है और एलपीजी सिलेंडर उपयोग नहीं होता है। बाचा एक छोटा–सा आदिवासी बाहुल्य गाँव है। इसके लिए पूरे गाँव में सोलर पैनल लगा कर बिजली तैयार की गयी। उसके बाद हर घर में जरूरत के मुताबिक बिजली मुहैया करायी गई। सौर ऊर्जा का ऐसा बेहतर प्रयोग और क्या हो सकता था कि इससे ईंधन की बचत तो हो ही रही है, गाँव प्रदूषण से भी बचा हुआ है।

ईंधन के लिए अब गाँव वालों को लकड़ी की जरूरत नहीं, इसलिए लकड़ी के लिए पेड़ों की कटाई रुकने से पर्यावरण संरक्षण अपने आप शुरू हो गया है। आईआईटी मुंबई के तकनीकी विशेषज्ञों ने सौर ऊर्जा की यूनिट को अत्याधुनिक बनाया है। उन्होंने गाँव के कुछ शिक्षित युवकों को यूनिट के मेंटेनेंस की ट्रेनिंग भी दी है, जिससे यूनिट बिना किसी बाधा के चलती रहेंगी। ओएनजीसी ने सभी घरों में निःशुल्क चूल्हे उपलब्ध करवाए हैं।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प. बंगाल)

शेर सिंह की सूझ-बूझ

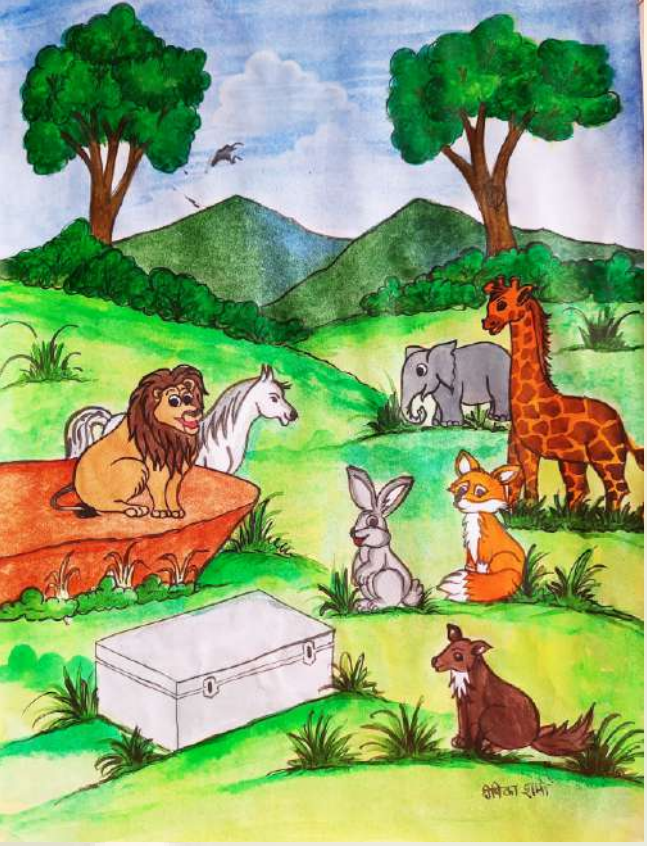

आजकल चंपक वन में रोज चोरियाँ हो रही थी, जिससे सभी जानवर परेशान हो गये थे। लेकिन चोरी कौन कर रहा है यह पता नहीं चल पा रहा था। अनेक जानवर रोज कुछ न कुछ चोरी की शिकायत लेकर चंपक वन के राजा शेर सिंह के पास पहुँचते। कोई कहता मेरा कम्बल चोरी हो गया तो कोई कहता– "आज मेरा फलों से भरा टोकरा ही कोई चुरा ले गया।" शेर सिंह को तब और आश्चर्य हुआ जब नन्दू मोर आकर गिड़गिड़ाया– "महाराज, मेरे दादा जी ने मुझे दो सोने के सिक्के दिये थे, वह रात में कोई चुरा ले गया।" शेर सिंह परेशान–आखिर चोरी कौन करता है–इसका कैसे पता चले? उन्होंने सभी जानवरों की सभा बुलाई, घंटों मीटिंग हुई, पर किसी को समझ में नहीं आया कि आखिर चोरी कौन करता है?"

अन्त में गहन सोच के बाद स्वयं शेर सिंह को एक तरकीब सूझी। उन्होंने अपने प्रधानमन्त्री हिन हिन घोड़े से कहा– "कल एक बड़ा लोहे का बक्सा दरबार में ला कर रखना और सभी जानवरों को सूचित कर देना कि सबको दरबार में उपस्थित रहना है।" हिन हिन घोड़े से कहा– "ठीक है महाराज।"

दूसरे दिन हिन हिन ने बड़ा लोहे का बक्सा दरबार में लाकर रख दिया। सभी जानवर भी समय से आ गये। शेर सिंह ने सबको सम्बोधित करते हुए कहा– "यह बड़े दुःख की बात है कि हमारे चम्पक वन में अब चोरी होने लगी है, यह पता लगाना भी मुश्किल है कि चोरी कौन करता है? मुझे यह जादुई बक्सा नन्दन वन के राजा ने भेजा है, उनका कहना है कि इससे आपको चोर को पकड़ने में सहायता मिलेगी।" शेर सिंह कुछ देर के लिए चुप हो गये।

सभी जानवर आश्चर्य से उस जादुई बक्से को देख रहे थे– यह बक्सा चोर कैसे पकड़ेगा, यह किसी की समझ में नहीं आ रहा था। शेर सिंह ने पुनः कहा– "आप सभी को बस इतना करना है कि एक कागज पर अपना नाम लिख कर उसके आगे एक स्टार बनाकर बक्से में डाल देना है, जो–जो चोर नहीं होगा उसके बनाया एक स्टार के आगे एक और स्टार बन जायेगा अर्थात् नाम के आगे दो स्टार बन जायेंगे और जो चोर होगा उसके आगे एक स्टार ही बना रह जायेगा।" इतना कहकर शेर सिंह चुप हो गये।

सभी जानवरों ने शेर सिंह के कथनानुसार कागज पर अपना नाम और आगे एक स्टार बनाकर बक्से में डाल दिया, जब सबके कागज पड़ गये, तब सन्दूक बन्द कर दिया गया। कल इसी समय सबको बुलाया गया। सब जानवर अपने–अपने घर चले गये। दूसरे दिन सब फिर उपस्थित हुए, सबके मन में उत्सुकता थी कि पता नहीं सन्दूक किसको चोर बतायेगा? प्रधानमन्त्री हिन हिन घोड़े ने बक्सा खोला। एक–एक कर सभी कागज निकाल कर शेर सिंह के आगे रखे जाने लगे। लगभग सभी कागजों पर सबके नाम के आगे एक ही स्टार था, केवल एक कागज पर दो स्टार बने थे, उस पर चन्दू भेड़िया का नाम था। जिसे देखकर शेर सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा– "चोर तो पकड़ में आ गया, चन्दू भेड़िया, सामने उपस्थित हो।"

चन्दू भेड़िया घबराया, उसे आश्चर्य हुआ कि वह कैसे पकड़ में आ गया? उसने तो अपने को सही साबित करने के लिए पहले ही अपने नाम के आगे दो स्टार बना दिये थे, जैसा कि शेर सिंह ने कहा था, फिर मुझे क्यों चोर कह रहे हैं? लगता है कि कोई और बात है। वह हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया। शेर सिंह ने मुस्कुराते हुए कहा– "यह कोई जादुई बक्सा नहीं है, बल्कि साधारण सन्दूक है। इस बक्से ने कुछ नहीं किया है बल्कि चोर की दाढ़ी में तिनका वाली कहावत इस समय सामने आई है। सभी जानवर भाइयों ने अपने नाम के आगे केवल एक स्टार बनाया, लेकिन तुम चोरी करते थे, इसलिए अपने नाम के आगे दो स्टार बना दिए ताकि मैं चोर साबित न होऊँ।"

चन्दू भेड़िया ने चालाकी में ऐसा ही किया था, वह डर से थर–थर काँप रहा था सोच कर कि जरूर उसे बड़ी सजा मिलेगी। शेर सिंह ने कहा कि– "तुम ही बताओ कि तुमको क्या सजा दी जाए?" चन्दू भेड़िया गिड़गिड़ाया– "मुझे माफ कर दीजिये महाराज। मैं बहुत शर्मिंदा और दुःखी हूँ। आगे कभी ऐसा काम नहीं करूँगा।" "ठीक है तुम वायदा करते हो तो उस पर चलना। मैं तुमको माफ करता हूँ, पर सबकी चुराई चीजें तुमको वापस लौटानी होगी।" चन्दू भेड़िया ने सबसे हाथ जोड़कर माफी माँगी और चोरी न करने की कसम खाई।

साधना श्रीवास्तव
सूरत गुजरात

आओ पढ़ें : नई किताबें

प्रस्तुत बाल कहानी संग्रह में 15 कहानियाँ है जो आस–पास के परिवेश की सामान्य घटनाओं पर आधारित है, मगर उनमें निहित संदेश व कथानक को लेखिका ने सहज, सरल अन्दाज में पेश किया है। बच्चों के लिए ये कहानियाँ मनोरंजन व ज्ञानवर्द्धन में सहायक होगी। इन कहानियों में पर्याप्त विविधता एवं रोचकता है। इस सचित्र व सजिल्द पुस्तक का मुद्रण भी सुन्दर है।

पुस्तक का नाम : नल तो ठीक है
मूल्य : 395 रुपये
प्रकाशक : जी.बी.डी.बुक्स, नई दिल्ली

लेखक : मीनू त्रिपाठी
पृष्ठ : 102
संस्करण : 2022

बाल कविताएँ बच्चों की प्रिय विधा है। फिर वे कविताएँ लयबद्ध हो तो बच्चे उन्हें अवश्य ही पढ़ना व गुनगुनाना चाहेंगे। इस पुस्तक की 36 कविताओं में यही विशेषता है। सामान्य विषयों पर भावपूर्ण सरस रचनाओं का यह संकलन विशिष्ट है। अधिकतर कविताएँ संदेशयुक्त एवं प्रेरक है। बच्चे अवश्य ही इन्हें चाव से पढ़ना चाहेंगे।

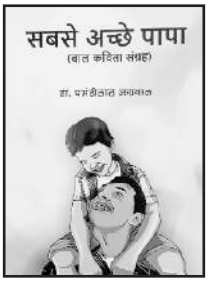

पुस्तक का नाम :सबसे अच्छे पापा
मूल्य : 125 रुपये
प्रकाशक : सूर्य भारती प्रकाशन, दिल्ली

लेखक : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
पृष्ठ : 40
संस्करण : 2021

'विदेश यात्रा के लिए चाहिए पासपोर्ट' पृष्ठ 28 का शेष....

पूर्ण होती है लेकिन अत्यधिक आवश्यक होने पर तत्काल पासपोर्ट भी बनवाया जा सकता है जिसमें प्रार्थी को तत्काल आवश्यकता का वैध प्रमाण प्रस्तुत करना पड़ता है।

फीस

वयस्क व्यक्ति के लिए 10 वर्ष का 36 पेज का पासपोर्ट बनवाने हेतु फीस 1500 रु. है तथा 60 पेज के पासपोर्ट हेतु 2000 रु. है। 5 वर्ष का बच्चों का पासपोर्ट बनवाने की फीस 1000 रु. है। तत्काल पासपोर्ट बनवाने के लिए 2000 रु. अतिरिक्त देना होता है।

पासपोर्ट के प्रकार :

हमारे देश में तीन प्रकार के पासपोर्ट जारी किये जाते हैं :

1. **सामान्य (Ordinary) :** यह सामान्य जनता हेतु होते हैं। इनके कवर पेज का रंग गहरा नीला होता। इस पर 'P' लिखा होता है।
2. **आधिकारिक (Official) :** केन्द्र एवं राज्य सरकार के कर्मचारी सरकारी काम से विदेश जाने पर इसका उपयोग करते हैं। इनके कवर पेज का रंग सफेद होता है। इस पर 'S' लिखा होता है। 2021 से यह E Passport के रूप में जारी होता है जिसमें एक चिप लगी होती है।
3. **कूटनीतिक (Diplomatic) :** राजनैयिक, दूतावास में कार्यरत भारतीय कर्मचारी जो अन्य देशों के दूतावासों उच्चायोग में कार्यरत है, उन्हें भारत सरकार इसे बनवाकर देती है। इनका कवर पेज का रंग मेहरून होता है तथा इस पर 'D' लिखा होता है। यह केन्द्रीय मंत्रियों, सांसदों तथा कुछ उच्च अधिकारियों को भी इश्यू होता है।

विदेश यात्रा हेतु नियम

वैसे तो प्रत्येक देश में प्रवेश करने के अपने अपने नियम है लेकिन सामान्यतया भारतीयों को अधिकतर देशों में प्रवेश से पूर्व उस देश का वैध 'वीसा' प्राप्त करना होता है। कुछ देश भारतीयों को on Arrival Visa 'आगमन पर वीसा' भी देते हैं।

वीसा लेने के लिए एवं किसी भी अन्य देश में प्रवेश के लिए पासपोर्ट कटा–फटा, गन्दा, तेल सना, खाना लगा हुआ कुछ भी लिखा हुआ आधिकारिक सूचना के अतिरिक्त नहीं होना चाहिये। अन्य देशों में प्रवेश करते समय आपके पासपोर्ट की समाप्ति तिथि कम से कम 180 दिन अवश्य होनी चाहिये। साथ ही धारक यात्री के पासपोर्ट में कम से कम चार खाली पेज होने चाहिये ताकि उन पर आगमन (Arival) प्रस्थान (Departure) की सील छाप भारत में एवं प्रवेश करने वाले देश में लगाई जा सके।

डॉ. आर.के. गर्ग
उदयपुर (राजस्थान)

खेल का समय

बिना कलम उठाये एक ही रेखा से मगरमच्छ, ऊँट, कबूतर और मुर्गे का सरल चित्र बनाना सीखो और अपने साथियों को भी सिखाओ।

चाँद मोहम्मद घोसी
मेड़ता सिटी (राजस्थान)

खेल से बड़ा खिलाड़ी : पेले

हर खेल का एक आइकन खिलाड़ी होता है। कई बार इस खिलाड़ी का कद इतना ऊँचा हो जाता है कि खेल के कारण उसके नाम के जगह खिलाड़ी के कारण उस खेल को पहचाना जाता है। जैसे हॉकी में मेजर ध्यानचंद, क्रिकेट में सर डोनाल्ड ब्रैडमैन और बास्केटबॉल में माइकल जॉर्डन। इसी तरह फुटबॉल में एडिशन अरांटस दो नासिमेंटो को यह सम्मान प्राप्त है। मुझे मालूम है इस नाम के किसी खिलाड़ी को आप जानते नहीं होंगे, परन्तु इस खिलाड़ी के निकनेम से सब जान जाएँगे कि यह खिलाड़ी हैं पेले।

पेले का जन्म ब्राजील के एक छोटे से गाँव ट्रेस कोराकोस में 23 अक्टूबर 1940 को हुआ। उनका नाम प्रसिद्ध वैज्ञानिक थॉमस एडिसन के नाम पर एडिसन रखा गया। उन्हें उनका उपनाम पेले उनके स्कूल में मिला। कहते हैं एक गोलकीपर था पिले। उसे एडिसन पेले पुकारते थे। इसलिए लोगों ने मजाक में उन्हीं का नाम पेले रख दिया।

पेले के पिता भी फुटबॉलर थे। पेले पढ़ाई के साथ–साथ चाय की दुकान पर नौकरी करते थे। फुटबॉल खेलने की उनमें बचपन से दीवानगी थी। पर हालत यह थी कि वह एक फुटबॉल भी नहीं खरीद सकते थे। ऐसे में मोजे में रद्दी कागज घुसाकर एक फुटबॉल बनाते और उससे अभ्यास करते।

15 वर्ष की उम्र में उनका चयन ब्राजील के प्रसिद्ध क्लब सेंटोस के लिए हो गया। यहाँ वह एक से बढ़कर एक महान खिलाड़ियों के साथ खेले और केवल 2 वर्ष के असाधारण प्रदर्शन के बाद उन्हें 1958 के विश्व कप के लिए ब्राज़ील की टीम में चुन लिया गया। स्वीडन में हुए इस विश्व कप में उन्हें पहली बार रूस के खिलाफ खेलने का मौका मिला। उस समय वह विश्व कप में खेलने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बने। पहली बार पेले का जलवा सेमीफाइनल में फ्रांस के विरुद्ध देखने को मिला, जहाँ उन्होंने लगातार तीन गोल मारकर हैट्रिक किया और हैट्रिक करने वाले व विश्व कप के सबसे युवा खिलाड़ी बने। 17 साल की उम्र में ब्राजील की टीम के साथ जब वह फाइनल में स्वीडन के खिलाफ उतरे, तो विश्व कप फाइनल खेलने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बने और मैच में भी दो गोल किए।

उसके बाद पेले कभी पीछे मुड़कर नहीं देखे और 1958 से 1970 तक 4 विश्वकप में ब्राजील तीन बार विश्व चैम्पियन बना। 1966 में ब्राजील कुछ खास नहीं कर पाई। अपने अन्तिम विश्व कप में पेले ने फिर से ब्राजील को विश्व चैम्पियन बनाया। पेले की मौजूदगी का असर इसी से समझा जा सकता है कि अपने 12 वर्ष के कैरियर में पेले ने ब्राजील को तीन बार विश्व चैम्पियन बनाया और उसके बाद अगले 52 वर्षों में ब्राजील केवल दो बार विश्व चैम्पियन बन सका।

1971 में पेले ने अंतरराष्ट्रीय मैचों से संन्यास ले लिया। फिर भी पेले विभिन्न रूप में फुटबॉल से जुड़े रहे और उनके शानदार व्यक्तित्व के कारण 1994 में उन्हें यूनेस्को का गुडविल एंबेसडर बनाया गया। ब्राजील की सरकार में वह खेल मंत्री भी रहे।

पेले की महानता इससे भी साबित होती है कि अपने कैरियर में उन्होंने 1363 गेम खेले और इसमें 1281 गोल करने में सफल रहे यानी प्रत्येक मैच में वह गोल करते थे। उनका नाम इसलिए बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी है। पेले पर कई फिल्में भी बनी हैं और उनके संघर्षपूर्ण जीवन को हर खिलाड़ी के लिए एक आदर्श माना जाता है। पेले ने सब को विश्वास दिलाया कि अगर आपके अन्दर लालसा है और आप कुछ करना चाहते हैं, तो सारी परेशानियाँ पीछे रह जाती हैं और आप सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते जाते हैं।

अपने अन्तिम दिनों में पेले कैंसर से लड़े और 29 दिसंबर 2022 को इलाज के दौरान उनक देहान्त हो गया।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

नन्ही परी और जादूगर

एक नन्ही सी परी थी। उसकी इच्छा थी कि वह पृथ्वी की सैर करे और वहाँ बच्चों के साथ खेले। उसने अपने मन की बात अपनी परी माँ को बतलायी। माँ ने उसे स्वीकृति देते हुए कहा कि वह धरती पर जाने के पूर्व अपने साथ बच्चों के लिए खिलौने लेकर जाए। अपनी माँ के कहे अनुसार उसने ढेर सारे खिलौने अपनी झोली में भरे और नन्हे–नन्हे परों को फरफराते हुए धरती की ओर उड़ चली।

इस समय बगीचे में गोलू–भोलू अपने अन्य दोस्तों के साथ लुका–छिपी का खेल खेल रहे थे। नन्ही परी दूर से इस अद्‌भुत खेल को देख रही थी। उसने मन ही मन तय कर लिया कि वह भी इस खेल को खेलेगी। गोलू इस समय आँख पर पट्टी बाँधे, अपने साथी को ढूँढ़ रहा था, जो किसी पेड़ के पीछे छिपे हुए थे। नन्ही परी, ठीक उसके सामने जा खड़ी हुई।

गोलू थोड़ा आगे बढ़ा ही था कि उसने नन्ही परी को अपनी पकड़ में लेते हुए चिल्लाया– "मैंने पकड़ लिया, मैंने पकड़ लिया।" कहते हुए अपने आँखों पर बँधी पट्टी को हटा दिया। उसे यह देखकर आश्चर्य हो रहा था कि गोलू–भोलू आदि न होकर, परों वाली एक लड़की उसके सामने खड़ी मुस्कुरा रही है। उसने उस लड़की से परिचय प्राप्त करना चाहा। नन्ही परी ने अपना परिचय देते हुए बतलाया कि वह आसमान में रहती है और तुम लोगों से दोस्ती करने और खेलने के लिए ही धरती पर आयी है। अपने साथ उपहार भी लेती आयी है। गोलू ने हामी भरते हुए कहा– "हाँ हाँ, तुम्हें हम अपना दोस्त बनाएँगे। उसने आवाज देकर सब मित्रों को इकट्‌ठा किया और नन्ही परी से परिचय करवाया। अपने बीच एक नया दोस्त पाकर सभी बच्चे बेहद खुश हुए।

सभी बच्चे झूम–झूमकर हाथ में हाथ डाले गाना गाने लगे। "देखो–देखो परी आयी। ढेर सारे तोहफे लायी। गुड्डे–गुड़ियों से भरी रेलगाड़ी लेकर आयी। देखो परी आयी, परी आयी।" नन्ही परी ने सभी को उपहार में खिलौने दिए। फिर सभी के साथ तरह–तरह के खेल खेले। खेल खेलते पता ही नहीं चल पाया कि शाम होने को है। जैसे ही नन्ही परी ने अँधेरे को घिरते देखा तो अपने मित्रों से विदा लेते हुए कहा कि वह कल फिर आएगी। इतना कहते हुए उसने अपने पंखों को फड़फड़ाया और आसमान में उड़ चली।

अब नन्ही परी रोज धरती पर आती और अपने मित्रों के साथ दिन भर खेलती और शाम होने के पहले अपने घर लौट जाती। एक दिन की बात है। जब सब मित्र लुका–छिपी का खेल खेल रहे थे, नन्ही परी इस समय एक वृक्ष के पीछे छिपी हुई थी, तभी एक जादूगर आया और उसने अपने जादू के बल पर उसे कैद कर लिया और वहाँ से चलता बना। यह बात देर तक किसी से छिपी न रह सकी कि नन्ही परी का अपहरण कर लिया गया है। काफी खोजने के बाद भी बच्चे अपनी नन्ही मित्र को खोज न सके तो उन्होंने पास के पोलिस–स्टेशन पर जाकर रपट लिखवाने की सोची। सब बच्चे पास ही के पुलिस

स्टेशन जा पहुँचे। उन्होंने अपनी टूटी–फूटी जबान में अपनी व्यथा–कथा कह सुनाई, लेकिन जब थानेदार ने उसका नाम बतलाने को कहा, तो सभी ने चुप्पी साध ली थी, क्योंकि वे परी का असली नाम पूछना तो भूल ही गए थे। वे उसे केवल परी ने नाम से जानते थे। थानेदार ने जब उसका हुलिया जानना चाहा तो गोलू ने बतलाया कि एक नन्ही सी परी, परीलोक से रोज आती है और हमारे साथ खेलती है और शाम होने से पहले रवाना हो जाती है।

थानेदार को सहसा विश्वास नहीं हुआ कि ऐसा भी हो सकता है। उसने अब बारी–बारी से बच्चों से जानना चाहा। सभी का जवाब एकसा था। खैर जैसे–तैसे उसने रिपोर्ट दर्ज की और बच्चों से कहा कि वह अपने आदमियों को चारों तरफ उस परी की तलाश करने को कहेगा और जैसे ही वह उन्हें मिल जाएगी, सूचना दे दी जाएगी। अब आप सब लोग अपने–अपने घर जाओ।

बच्चे परी के अचानक गुम हो जाने से परेशान तो थे, लेकिन कर भी क्या सकते थे। उधर परी जब अपने घर नहीं पहुँची तो उसके माता–पिता भी परेशान हो रहे थे। उसकी खोज में दोनों धरती पर आए। इस समय बच्चे घर जाने के लिए तैयार हुए ही थे कि वे बच्चों के सामने प्रकट हुए और अपनी बेटी के बारे में जानना चाहा कि उनकी बेटी कहाँ है? गोलू ने उदास होते हुए बतलाया कि अचानक वह न जाने कहाँ गायब हो गई है? लगता है कि किसी बदमाश ने उसका अपहरण कर लिया है। काफी खोज–खबर के बाद भी वह हमें मिल नहीं रही है। उसने यह भी बतलाया कि हमने उसकी रिपोर्ट थाने में भी दर्ज करवा दी है।

परी राजा ने बच्चों से कहा कि वे और ज्यादा परेशान न हो। वे तत्काल ही उसे ढूँढ़ निकालेंगे। इतना कहकर उन्होंने अपनी आँखें बन्द करते हुए अपनी जादुई छड़ी को चारों तरफ घुमाते हुए कुछ मन्त्र पढ़े। मन्त्र के पढ़ते ही नन्ही परी और जादूगर सामने खडे थे। जादूगर के हाथों में हथकड़ी पड़ी हुई थी। उसने अपनी गलती स्वीकार करते हुए कहा कि अब वह भविष्य में बच्चों का अपहरण नहीं करेगा, उसे माफ कर दिया जाए।

आई तेज हवा

ऑफ करें हम पंखे–कूलर,
आयी तेज हवा है घर पर।

भैया का सब खेल बिगाड़ा
दादा के कुर्ते को फाड़ा
बंटू का पलटा है क्रूजर।...

पापा के बिस्तर को मोड़ा,
मम्मी के शीशे को तोड़ा
सब कुछ बिखरा भीतर–बाहर।...

गयी हवा फिर अपने घर से,
चीजें करें व्यवस्थित फिर से,
ऑन करें फिर पंखे–कूलर।...

योगेन्द्र प्रताप मौर्य
जौनपुर (उत्तर प्रदेश)

राजा ने उसे सख्त हिदायत देते हुए माफ कर दिया। जादूगर के कब्जे से आजाद होते ही नन्ही परी अपने माता–पिता के पास दौड़ी चली आयी और उनसे लिपट गई। सभी बच्चे अपनी दोस्त को पुनः अपने बीच पाकर खुशियाँ मनाने लगे। नन्ही परी अपने माता–पिता के साथ आसमान में उड़ चली। सभी बच्चे हाथ हिलाकर उसको विदा कर रहे थे।

सोनाली यादव,कक्षा–सात
सरस्वती शिशु मन्दिर,छिन्दवाडा (मध्य प्रदेश)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. साहसी बच्चों की कहानियाँ पढ़कर आपके मन में क्या भावना पैदा होती है ?
2. राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी को क्यों मनाया जाता है?
3. किसान ने दोनों बेटियों की विपरीत मांग का क्या समाधान बताया ?
4. 'शूलों में मुस्काते फूल' इस पंक्ति वाली कविता का शीर्षक क्या है ?
5. शान्ति स्वरूप भटनागर किन चार संस्थाओं के अध्यक्ष रहे?
6. इस अंक की नाटिका का क्या संदेश है?
7. क्या लोमड़ी को झूठ बोलने से कोई लाभ हुआ?
8. बच्चों का पासपोर्ट कितने साल के लिए बनाया जाता है?
9. पापा ने फास्ट फूड को टेस्टी और हेल्दी कैसे बनाया?
10. शेरसिंह ने चोर का पता लगाने के लिए क्या तरीका काम में लिया?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) नारियल–भ्रूणपोष (ब) सेव–पुष्पासन (स) सिंघाड़ा–बीजपत्र (द) टमाटर–बाह्य, मध्य एवं अंतः फलभित्ति (2) आर्किड (3) मशरुम (4) शैवाल व कवक (5) रेफ्लीसिया (6) राइजोबियम (7) चुकन्दर (8) आँवला (9) नेपेन्थीज (10) डेन्ड्रोलोजी

अन्तर ढूँढ़िए

(1) गिलास के जूस का रंग अलग (2) आम का आकार बड़ा (3) पर्दे के गोल बिन्दु गायब (4) तरबूज का रंग अलग (5) लड़की के टीशर्ट के कॉलर अतिरिक्त (6) सूरज की किरणें अतिरिक्त (7) हरे रंग की झाड़ी गायब (8) लड़के की आँख का आकार बड़ा

दिमागी कसरत

1. मोदक 2. राजभोग 3. रसगुल्ला 4. खीर 5. रबड़ी 6. पेड़ा 7. तारफीणी 8. इमरती 9. गुलाब जामुन 10. जलेबी 11. घेवर 12. अलवर पाक 13. आम पाक 14.पिस्तारोल 15. बर्फी 16. बूंदी 17. कलाकंद

बताओ तो जानें

नम्बर 1 और 5 एक से पक्षी हैं।

इन प्रतीकों को पहचानो

A. जीवन बीमा निगम B. एनसीईआरटी C. अणुव्रत विश्व भारती D. भाभा एटोमिक रिसर्च सेन्टर E. पंजाब नेशनल बैंक

बूझो तो जानें

(1) साइकिल (2) बाइक (3) सूरज (4) तितली (5) पहिया

वर्ग पहेली

1 दी	2 न	3 द	4 या	ल		5 से	ठ
6 प	द	या	त्री		7 आ	ना	
दा		नं		8 प्र	जा	प	9 ति
10 न	11 क	द			12 द	ति	या
	म		13 नि	त्य			
14 शि	ला	15 खं	ड		16 वि	17 ज्ञा	18 न
वा		19 ड	र		20 क	प	ट
21 जी	व	न		22 कॉ	ट	न	

सुडोकू

1	3	6	4	9	2	5	8	7
5	9	4	7	6	8	1	3	2
7	2	8	3	1	5	9	6	4
8	6	1	5	7	4	2	9	3
2	7	5	9	3	1	6	4	8
3	4	9	2	8	6	7	1	5
6	5	7	1	4	3	8	2	9
4	8	2	6	5	9	3	7	1
9	1	3	8	2	7	4	5	6

दृष्टि शर्मा, कक्षा 8, बीकानेर

लब्धि सिंघी, कक्षा 7, बेंगलूरु

प्रिशा चौखड़ा, कक्षा 8, थाने

नमन मोदी, कक्षा 1, बीकानेर

बाल दिवस मनाया

विद्यालय में बाल दिवस मनाया।
खूब मजा हम बच्चों को आया।।

विद्यालय में लगाया था मेला।
वहाँ पर हर चीज का था ठेला।।

खूब सारे खेलों को हमने खेला।
स्वादिष्ट व्यंजन से भरा था मेला।।

शिक्षकों ने मिल मेला लगाया।
सभी बच्चों को आनंद दिलाया।।

पानी पुरी हम सभी ने खाई।
चॉकलेट भी हम सब ने खाई।

चिप्स– कुरकुरे भी हमने खाएँ।
बिस्किट हमने मिलकर खाएँ ।।

सैंडविच–पिज़्ज़ा मिल रहा था।
छाछ–वड़ापाव भी मिल रहा था।।

खेल हम बच्चों ने खूब खेलें ।
विद्यालय में रोज लगे ऐसे मेले।।

मजा हम सबको खूब आया।
मेले का हमने मजा उठाया।।

पाखी जैन कक्षा 5
उदयपुर राजस्थान

आरोही माहेश्वरी, कक्षा 4, चित्तौड़गढ़

अक्षय कुमार, कक्षा 8, बीकानेर

आप भी अपनी **कलम और कूँची** का कमाल में मोबाइल नं. 9351552651 पर या पत्रिका के पते पर भेजें।

चित्रांकन : विज्ञान दिवस एवं महिला दिवस

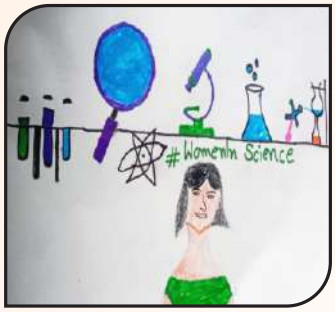

सोनिया

मोहिनी

शिक्षा

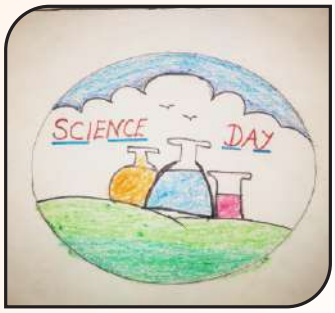

सोनू

सुमन

अंजलि

हिना

बंशी

कविता

मैं भी जानूँ,
तुम भी जानो,
जाने सारा संसार,
ज्ञान की ज्योति,
विज्ञान के मोती,
बाँटें सारा संसार

सोनिया

स्लोगन

विज्ञान का ज्ञान,
जीवन का वरदान

•

देखो, पूछो, समझो, करके जानो,
तब खुद को वैज्ञानिक मानो

•

बालिका पढ़ेगी विज्ञान,
तभी तो बनेगा देश महान

सामग्री सौजन्य :
आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- मंडोर, जोधपुर

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

अद्भुत है स्नो वर्ल्ड पार्क

हर साल चीन के हेइलोंगजियांग प्रांत के हार्बिन शहर में बर्फ से बनी कलाकृतियों का आइस एंड स्नो वर्ल्ड का आयोजन किया जाता है। यह विश्व का अपनी तरह का इकलौता पार्क है। यह पूरा पार्क छह लाख वर्ग मीटर में फैला है। इस प्रांत में 2017 में देश-विदेश के 12 करोड़ पर्यटक पहुँचे। हर साल इसकी प्रसिद्धि को देखते हुए फेस्टिवल का आकार प्रकार बड़ा होता जा रहा है। पार्क में स्कल्पचर बनाने में 1.8 लाख बर्फ के क्यूब का इस्तेमाल हुआ था। यह फेस्टिवल करीब 35 साल से आयोजित किया जा रहा है और इसे देखने हर दिन करीब एक लाख से अधिक लोग आते हैं।

42 सैकंड में 6.31 अरब का पहाड़ा सुनाया

राजस्थान के चिड़ावा शहर निवासी नन्हीं गणितज्ञ वंशिका शर्मा ने फिर से गणित में विश्व कीर्तिमान स्थापित किया है। कोटा में 12वीं के साथ आईआईटी की तैयारी कर रही 17 वर्षीय वंशिका ने इस बार 30 दिसंबर 2022 को ऑनलाइन टेस्ट में रेकॉर्ड कायम किया। उन्होंने महज 42 सैकंड में 6 अरब 31 करोड़ 40 लाख 92 हजार 468 के पहाड़े को उल्टा और सीधा दोनों तरह से बोलकर ओएमजी बुक ऑफ रेकॉर्ड में नाम दर्ज करवाया है। वंशिका मोटिवेशनल स्पीकर भी है एवं गणित आधारित किताबें भी लिखी है। चार साल में वंशिका का यह आठवाँ विश्व रेकॉर्ड है।

3 दिन में 7 महाद्वीप घूमने का रिकॉर्ड बनाया

गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के अनुसार भारतवंशी डॉ. अली ईरानी व सुजॉय मित्रा ने सबसे तेजी से 7 महाद्वीपों की यात्रा की। दोनों ने 3 दिन, 1 घंटे 5 मिनट 4 सैकेंड में एशिया, अफ्रीका, यूरोप, उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका, अंटार्कटिक की यात्रा की। ये 4 दिसम्बर को अंटार्कटिका यात्रा शुरू कर 7 दिसम्बर को आस्ट्रेलिया पहुँचे। उन्होंने विमान, टैक्सी, शिप, बस जैसे साधनों में यात्रा की।

उदयपुर की बेटी की सियाचिन ग्लेशियर में तैनाती

उदयपुर की बेटी कैप्टन शिवा ने देश में अपने साथ मेवाड़ का नाम ऊँचा किया है। कैप्टन शिवा को सबसे ऊँचे युद्धक्षेत्र सियाचिन ग्लेशियर में तैनाती मिली है। इसके साथ ही फायर एंड फ्यूरी कॉर्प्स की कैप्टन शिवा चौहान दुनिया के सबसे ऊँचे युद्धक्षेत्र में नियुक्त होने वाली पहली महिला अधिकारी बन गई हैं। उन्हें कुमार पोस्ट पर तैनात किया गया है। सेना के फायर एंड फ्यूरी कॉर्प्स ने ट्विटर पर कैप्टन शिवा चौहान की इस सफलता की जानकारी दी।

ट्री टीचर का पर्यावरण चेतना पाठ

बाड़मेर जिले के इन्द्रोई निवासी भेराराम भाखर पेशे से अध्यापक हैं। स्कूल में पढ़ाने के बाद अपना पूरा समय पर्यावरण चेतना को देते हैं। वे पौधे लगवाने के साथ उनके संरक्षण का जिम्मा भी बच्चों को देते हैं। करीब 27 हजार किमी बाइक से पर्यावरण चेतना की इस मुहिम को गति दे चुके भाखर अपनी इस मुहिम में 1.20 लाख लोगों को जोड़ चुके हैं। भाखर बताते हैं कि पर्यावरण के प्रति लोगों में अवेयरनेस बढ़ी है। शादी समारोह, जन्मदिन, शादी सालगिरह, त्योहार, उत्सव, पुरखों की पुण्यतिथि, सेवानिवृत समारोह सहित अन्य आयोजनों में पौधे लगाना और पौधे भेंट करना भाखर की दिनचर्या का हिस्सा है।

107 दिन में 107 मैराथन का रेकॉर्ड

ऑस्ट्रेलिया की 32 वर्षीय एर्चाना मुरे बार्टलेट ने 107 दिन तक लगातार हर रोज मैराथन दौड़कर महिला वर्ग में नया गिनीज वर्ल्ड रेकॉर्ड बनाया है। इससे एर्चाना वन्यजीव संरक्षण के लिए जागरूक कर रही है। उन्होंने अगस्त में आस्ट्रेलिया के ईस्ट कोस्ट से केप यॉर्क, क्वींसलैंड पर रोजाना 42.2 किमी की मैराथन शुरू की थी।

बाल-कलम

The world will be better
If I make it corruption free
Corruption will disappear
Before I say
One! Two! Three!
Corruption means
Dishonesty in any from
Whether it is
disobeying your
Teacher or your mom

Jayshankar
Class 5, Bikaner

MY MESMERIC LAND

My nation, my land
It is the best one,
With green meadows,
Sparkling rivers and glittering sand
The valleys, hills
And snow-capped mountains.
The shimmering streams
Bubbling springs and fountains
We have a rainbow
of everything, from culture,
flowers to seasons.
We, Indians, are known
for many good reasons!

Drishti Sharma, Class 8
Bikaner

Talk to the Animals

If we could talk to the animals,
just imagine it. Cratting to a
chimp chimpanzee. Imcgine talking
to a tger, chattingto a cheetah.
What a neat achievement that
would be!
If we could walk with the
animals, talk with the animals,
grant and squeak and squawk with
the animals, And they could
squeak and speak cnd talk to me.

Akshay Kumar, Class 8
Bikaner

जन्मदिन की बधाई

02 फरवरी

नमन मोदी
बीकानेर

02 फरवरी

ओजस्वी
गौरीगंज

17 फरवरी

आरोही माहेश्वरी
चित्तौड़गढ़

मीठी रसभरी जलेबी

जलेबी एक ऐसी मिठाई हैं जिसका नाम लेने से ही मुँह में पानी आ जाता है। यह भारत समेत कई अन्य देशों में लोकप्रिय मिठाई हैं। भारत में जब भी स्वादिष्ट मिठाइयों का जिक्र होता है तो उसमें जलेबी का नाम जरूर आता है। जलेबी दिखने में सुन्दर दिखती हैं। जलेबी अपने स्वाद की वजह से मिठाइयों में अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं और खाने वालों को अपना दीवाना बना देती हैं।

जलेबी भारत की सबसे लोकप्रिय मिठाइयों में से एक है। जलेबी भारत के साथ–साथ पाकिस्तान, ईरान और मध्यपूर्व एशिया में भी खूब लोकप्रिय है। जलेबी खमीरयुक्त मैदे के घोल से गोल–गोल या अनियमित आकार में घी या तेल में तल कर बनायी जाती है जिसे बाद में चीनी की चाशनी में डुबोकर तैयार किया जाता है। यह अत्यंत ही स्वादिष्ट मिठाई है जिसे गर्म–गर्म खाने का मजा ही कुछ और है।

जलेबी का इतिहास – जलेबी की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कई मत है। जलेबी जिसे अरबी में जलाबिया या फारसी में जुलबीआ कहा जाता है। इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में मध्यपूर्व एशिया दावेदारी पेश करता है क्योंकि मध्यकालीन एक किताब 'किताब–अल–तबीज' में जलाबिया नामक एक मिठाई का वर्णन मिलता है जो इस दावे की पुष्टि करता है।

वैसे जलेबी बनाने की विधियों का वर्णन भारत की पुस्तकों में भी मिला है। सत्रहवीं शताब्दी की पुस्तक भोजनकुतूहला और संस्कृत पुस्तक गुण्यगुणबोधनी में इसे देखा जा सकता है। शरदचंद्र पेंढारकर में इसे कुण्डलिका कहा गया है। जलेबी के प्राचीन नामों की बात करें तो कुण्डलिका और जल वल्लिका का वर्णन तो प्राचीन किताबों में मिलता है।

जलेबी नाम क्यों पड़ा? – कदाचित मीठे जल से परिपूर्ण होने की वजह से यह जलेबी हो गया हो या फिर जलाबिया या जुलबिया ही बदलते बदलते जलेबी हो गया हो। भारत और पाकिस्तान में इसे जलेबी कहा जाता है। महाराष्ट्र में इसे ही जिलेबी या जिलबी कहा जाता है नेपाल में जेरी जबकि बंगाल में इसे जिलपी बोला जाता है।

क्या है चोटहिया जलेबी – उत्तर प्रदेश और बिहार के कुछ हिस्सों में एक प्रकार की और जलेबी मिलती है जिसे चोटहिया जलेबी कहा जाता है। इस जलेबी में खासियत यह होती है कि इसमें चीनी की चाशनी की जगह गुड़ की चाशनी का प्रयोग होता है। गुड़ की वजह से जलेबी में एक अलग ही फ्लेवर आ जाता है। विदेशी पर्यटक जब भारत आते हैं तो जलेबी खाकर बहुत खुश होते हैं क्योंकि इसकी मिठास मन और मस्तिष्क दोनों को चरम आनन्द की अनुभूति देती है। इसमें रंग लाने के लिए केशर का प्रयोग होता है।

दक्षिण के राज्यों में तो इसे झांगरी कहा जाता है। जलेबी की शुरूआत मध्यपूर्व के देशों से विशेषकर ईरान से मानी जाती है। जलेबी मैदे के घोल से बनायी जाती है। जलेबी बनाने के लिए मैदे में खमीर का उठना आवश्यक माना जाता है तब ही वो स्पंजी बनती है। जलेबी का आकार गोल लच्छेदार होता है, ज्यादातर जलेबी कड़क और करारी होती है वही हैदराबाद की जलेबी नर्म और खुशबूदार होती है।

जलेबी का स्वाद गर्म–गर्म खाने में है जबकि कुछ लोग इसे ठन्डे दही में डालकर इसके जायके का मजा लेते हैं। जलेबी को ज्यादातर सुबह या शाम नाश्ते के साथ खाया जाता है। मध्य प्रदेश के इन्दौर की पोहा जलेबी सारी दुनिया में प्रसिद्ध है।

मुगधा पांडे
नई दिल्ली

पतंग का धागा

ठंड में मावठा (वर्षा) गिरने की बात तो पता थी, लेकिन मौसम में अचानक परिवर्तन से अंशिका को पापा से पूछने के लिए नए प्रश्न मिल गए। बादलों की गड़गड़ाहट और आकाश में बिजली चमकती देखकर मम्मी ने किचन से ही बेटी अंशिका को आवाज दी और जोर देकर कहा– ''अंशिका..... क्या कर रही है? बारिश आने वाली है। जल्दी से छत पर जाकर कपड़े उठा ला, नहीं तो भींग जाएँगे।''

अंशिका ने, ''जी मम्मी'' कहकर छत की ओर दौड़ लगा दी। अंशिका जैसे ही छत पर पहुँची बारिश होने लगी। अंशिका ने देखा कि पास के बिजली के खंबे पर पतंग लटकी हुई है और गीला धागा उसकी छत पर पड़ा हुआ है। उसने झट से धागा उठाया और पतंग खींचने लगी, लेकिन ये क्या, उसके मुँह से जोर की चीख निकल पड़ी। मम्मी ने सुना तो वह भी छत की ओर दौड़ीं, देखा अंशिका गीले धागे से चिपकी है। मम्मी ने तत्परता दिखाते हुए प्लास्टिक की झाड़ू से अंशिका के हाथ में चिपका धागा अलग किया। सुबकते हुए अंशिका मम्मी से चिपट गई। बोली– ''मम्मी हाथ में तेज झनझनाहट हुई।'' मम्मी ने बच्ची के हाथ को हल्के स्पर्श से मला और नीचे कमरे में ले आई।

यूँ तो अंशिका की माँ ने बिजली उपकरणों से हमेशा दूर रहने की सख्त हिदायत दे रखी थी, लेकिन ये बात उन्हें भी पहली बार पता चली कि गीले धागे से भी करंट फैल सकता है। वे तो हमेशा ही बच्चों को ट्रांसफार्मर, बिजली के खंबे आदि के पास न खेलने को कहती रही, परन्तु आज की घटना एक नया सबक दे गयी। कुछ देर के लिए घबराई माँ ने अपनी बेटी को एक बार फिर बिजली के तार, पानी गर्म करने की रॉड, एक्सटेंशन बोर्ड और प्लग लगाने, निकालने जैसे काम करते समय सावधान रहने की हिदायत दी। अंशिका ने भी मासूमियत भरे अन्दाज में वादा किया– ''मम्मी! मैं पूरा ध्यान रखूँगी और मेरी सहेलियों को भी बताऊँगी।''

आशीष श्रीवास्तव
भोपाल (मध्य प्रदेश)

इन प्रतीकों को पहचानो

A

B

C

D

E

Trees are Beautiful

Didn't you see the picture on the right?
What does it have to do with the tree?

Look and Write

Look at the first set of pictures in each row. Then fill in the boxes in the second set.

- Venu Variath

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत आंदोलन

जन–जन में मानवीय मूल्यों को प्रतिस्थापित करने के पवित्र उद्देश्य से फाल्गुन शुक्ल द्वितीया – 1 मार्च 1949 को महान संत आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया था। बिना किसी जाति, धर्म, रंग और लिंग के भेदभाव के अणुव्रत का दर्शन मानव के श्रेष्ठ चरित्र को उजागर करने का एक व्यावहारिक मार्ग प्रस्तुत करता है। लाखों–लाखों लोगों ने अणुव्रत दर्शन को अपने जीवन में उतार कर सकारात्मक रूपांतरण को अनुभव किया है।

अणुव्रत अनुशास्ता

इन 75 वर्षों में अणुव्रत आंदोलन को आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और वर्तमान में आचार्य महाश्रमण जैसे तपस्वी और साधक संतपुरुषों का अनुशास्ता के रूप में आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिलता रहा है। यह इस आंदोलन की सुदीर्घजीवी सफलता की धुरी है।

अणुविभा

अणुविभा के संक्षिप्त नाम से लोकप्रिय अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी अणुव्रत आंदोलन की केंद्रीय प्रतिनिधि संस्था है। अणुविभा संयुक्त राष्ट्र संघ के सिविल सोसायटी विंग से सम्बद्ध एक वैश्विक संस्थान है। अणुविभा के निर्देशन में देशभर में 150 से अधिक अणुव्रत समितियँ आंदोलन की गतिविधियों को विस्तार देती हैं। विश्व के 40 देशों में शांति व अहिंसा के क्षेत्र में काम कर रही संस्थाओं व व्यक्तियों से अणुविभा की नेटवर्किंग है।

अणुव्रत प्रकाशन

अणुविभा के दो मासिक प्रकाशन हैं – 'अणुव्रत' और 'बच्चों का देश', जो क्रमशः बड़ों और बच्चों में संयम आधारित अणुव्रत जीवनशैली को सम्पुष्ट करने का माध्यम हैं।

अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत आंदोलन के 75वें वर्ष को "अणुव्रत अमृत महोत्सव" के रूप में वर्षपर्यंत मनाने का निर्णय लिया गया है। इस दौरान व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण और कार्यकर्ता निर्माण को लक्षित अनेक प्रकल्प हाथ में लिए गए हैं। ये कार्यक्रम स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किये जाएँगे। आइए, मानव मात्र के कल्याण को लक्षित इस आंदोलन जुड़ कर स्वयं और इस दुनिया को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करें। अणुव्रत अमृत महोत्सव का केंद्रीय उद्देश्य है – जन–जन में अणुव्रत के प्रति निष्ठा और संयम की चेतना का जागरण।

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

रुक्मिणि देवी अरुंडेल

जन्म : 29 फरवरी, 1904 ■ निधन : 24 फरवरी, 1986

तमिलनाडु के मदुरै जिले में जन्मी रुक्मिणी देवी प्रसिद्ध भारतीय नृत्यांगना और दर्शन शास्त्री थी। इन्होंने भरतनाट्यम में भक्ति भाव भरा तथा नृत्य की एक विधा सादीर को पुनः स्थापित किया। इनको कला के क्षेत्र में 1956 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। उन्हें संगीत नाटक अवार्ड और संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप मिली। उन्हें राज्यसभा की प्रथम मनोनीत महिला सदस्य होने का भी गौरव हासिल हुआ।